

सपादक
प्रकाश पण्डित

प्रथम सस्करण
फर्वरी, १९५८

मूल्य
डेढ रुपया

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफरिन पुल, दिल्ली



सब का तो मुदावा कर डाला, अपना ही मुदावा कर न सके।
सब के तो गिरेबा सी डाले, अपना ही गिरेबा भूल गए॥

जीवनी



" 'मजाज़' उर्दू शायरी का 'कीट्स'[1] है।"

" 'मजाज़' शराबी है।"

" 'मजाज़' बड़ा रसिक और चुटकलेबाज़ है।"

" 'मजाज़' के नाम पर गर्ल्स कालिज अलीगढ़ में लाटरियाँ डाली जाती थीं कि 'मजाज़' किसके हिस्से में पड़ता है। उसकी कविताएँ तकियों के नीचे छुपाकर आँसुओं से सींची जाती थीं और कुंवारियाँ अपने भावी बेटों का नाम उसके नाम पर रखने की कसमें खाती थीं।"

" 'मजाज़' के जीवन की सबसे बड़ी ट्रेजिडी औरत है।"

'मजाज़' से मिलने से पूर्व मैं 'मजाज़' के बारे में तरह-तरह की बातें सुना और पढ़ा करता था और उसका रंगारंग चित्र मैंने उसकी रचनाओं में भी देखा था। विशेष-रूप से उसकी नज़्म 'आवारा' में तो मैंने उसे साक्षात् रूप में देख लिया था। जगमगाती, जागती सड़कों पर आवारा फिरने वाला शायर! जिसे रात हँस-हँस कर एक ओर मैख़ाने और शहनाज़ के काशाने (घर) में चलने को कहती है तो दूसरी ओर सुनसान वीराने में। जो प्रेम की असफलता और समाज के तिरस्कार का शिकार है। जिसके दिल में बेदार जीवन

1. विश्व-विख्यात अंग्रेज़ रोमांटिक कवि

की उदासी भी है और वातावरण की विषमताओ के विरुद्ध विद्रोह की प्रचड अग्नि भी। 'आवारा' मे मैंने 'मजाज़' का पूरा व्यक्तित्व देख लिया लेकिन इसके साथ ही इस बाग़ो-बहार व्यक्ति को समीप से देखने की मेरी इच्छा और भी प्रवल हो उठी।

यह इच्छा बहुत समय बाद १९४८ ई० मे पूरी हुई जब देश के बटवारे के बाद मैं लाहौर से दिल्ली में आ बसा था और मैंने और 'साहिर' लुधियानवी ने उर्दू की प्रसिद्ध पत्रिका 'शाहराह' की नीव डाली थी। 'मजाज़' से मेरी मुलाकात बडे नाटकीय ढग से हुई। रात के दस-ग्यारह का समय होगा। मैं और 'साहिर' नया मुहल्ला, पुल बगश, के एक मकान में डट रहे थे। मुहल्ला मुसलमानो का था और शहर का वातावरण मुसलमानों के खिलाफ। अर्थात्, एक चीज़ मेरे खिलाफ थी और दूसरी 'साहिर' के। इसलिए हम चाहते थे कि बडे यत्नो से हाथ आए उस मकान पर हमारे कब्ज़े की किसी को कानो-कान खबर न हो। 'साहिर' चुपके-चुपके सामान ढो रहा था और मै मुहल्ले के बाहर सडक के किनारे सामान की रखवाली कर रहा था कि एकाएक एक दुबला-पतला व्यक्ति अपने शरीर नामक हड्डियो के ढचर पर शेरवानी मढे बुरी तरह लडखडाता और बडबडाता मेरे सामने आ खडा हुआ।

"अख्तर शीरानी[1] मर गया—हाए 'अख्तर'! तू उर्दू का बहुत बडा शायर था—बहुत बडा।"

---

१ उर्दू का एक प्रसिद्ध रोमांटिक शायर

वह बार-बार यही वाक्य दोहरा रहा था। हाथों से शून्य में उल्टी-सीधी रेखायें बना रहा था और साथ-साथ अपने मेज़बान को कोसने दे रहा था जिसने घर में शराब होने पर भी उसे और शराब पीने को न दी थी और अपनी मोटर में बिठाकर रेलवे पुल के पास छोड़ दिया था। ज़ाहिर है कि इस ऊटपटांग सी मुसीबत से मैं एकदम बौखला गया। मैं नहीं कह सकता कि उस समय इस व्यक्ति से मैं किस तरह पेश आता कि ठीक उसी समय वहीं से 'जोश' मलीहाबादी निकल आए और मुझे पहचान कर बोले "इसे संभालो प्रकाश! यह 'मजाज़' है।"

'मजाज़' को संभालने की बजाय उस समय आवश्यकता यद्यपि अपने आप को संभालने की थी लेकिन 'मजाज़' का नाम सुनते ही मैं एकदम चौंक पड़ा और दूसरे ही क्षण सब कुछ भुलाते हुए मैं इस प्रकार उससे लिपट गया मानो वर्षों पुरानी मुलाक़ात हो।

'मजाज़' से, जैसा कि प्रत्यक्ष है, उस समय मेरी वर्षों पुरानी मुलाक़ात न थी, लेकिन आज दस वर्ष बाद ये पंक्तियाँ लिखते समय मैं कह सकता हूँ कि मैंने 'मजाज़' को हर रंग में देखा है। होश में, बेहोशी में। शराब के लिए भटकते हुए, और शराब पीकर बहकते हुए। पागलपन की अवस्था में और [illegible] [illegible] हुए। उसकी जीवन की निराशाओं और विफलताओं पर दुखी होते हुए और उसके जीवन की निराशाओं और विफलताओं [illegible] [illegible] जीवन की [illegible] [illegible] [illegible]

हुए। सोते-जागते, उठते-बैठते, चलते-फिरते 'मजाज' को मैने खूब-खूब देखा है। उसकी शायरी और व्यक्तित्व पर लिखा गया लगभग हर शब्द पढा है। उसके मित्रो और सगे-सम्बन्धियो से मिला हू और दो-चार बार मुझे उसके आतिथ्य का सौभाग्य भी प्राप्त हो चुका है। यो अपने-आपको मै उन लोगो मे से समझता हू जिन्हे 'मजाज़' और उसकी शायरी पर किंचित् विश्वास के साथ कुछ लिखने का अधिकार पहुँचता है।

'मजाज' उन दिनो लगभग एक महीना हमारे साथ रहा। उसकी अधाधुंद शराबनोशी के बारे मे मै पहले से सुन चुका था और पहली मुलाकात मे मुझे इसका तजुर्बा भी हो गया था, लेकिन इस एक महीने मे मुझे अनुभव हुआ कि 'मजाज़' शराब को नही पीता, शराब बडी बेदर्दी से 'मजाज़' को पीती जा रही है। और यह अनुभव १९५१-५२ ई० में और भी उग्र हो उठा जब मेरे मौजूदा चांदनी चौक वाले मकान मे 'मजाज़' लगातार कई महीने मेरे साथ रहा। इस बार 'मजाज़' को मैं उर्दू बाज़ार की एक पुस्तको की दुकान पर से अर्ध-मृतावस्था मे उठाकर लाया था और मैने निश्चय किया था कि जहाँ तक सभव होगा उसे शराब नही पीने दूगा। लेकिन अफसोस! मेरे सभी प्रयत्न व्यर्थ हुए। खाट छोडते ही 'मजाज़' ने फिर से पीना शुरू कर दिया—इस बुरी तरह कि जीवन मे तीसरी बार उस पर नर्वस ब्रेकडाउन का आक्रमण हुआ। उन दिनो उसने दिल्ली मे ऐसी खाक छानी, काम-प्रवृत्ति के ऐसे तमाशे दिखाये कि विश्वास न आता था। यही वह 'मजाज़'

है जो होश की हालत मे किसी मामूली से छिछोरपन को भी गुनाह का दर्जा देता था, जिसे हर समय छोटे-बड़े का लिहाज़ रहता था और जो इतना शर्मीला और लजीला था कि स्त्रियो के सामने उनकी नज़रें तक न उठती थी। उन दिनो 'मजाज' को देखकर पथ-भ्रष्ट महानता का ख्याल आता था। और शायद उसने ठीक ही कहा था कि .

मेरी बर्बादियो का हम-नशीनो !
तुम्हे क्या, खुद मुझे भी गम नही है ॥

यो तो 'मजाज़' को शुरू से रतजगे की बीमारी थी और इसी कारण घर के लोगो ने उनका नाम 'जग्गन' रख छोड़ा था, लेकिन उन दिनो शराब की तन्द्रा के अतिरिक्त 'मजाज़' को बिल्कुल निद्रा न आती थी। अक्सर रात के डेढ़-दो बजे घर पहुँचता या पहुँचाया जाता। दरवाजा खोलने और उसे उसके कमरे मे पहुँचाकर खाना खिलाने की मैने नौकर को ताकीद कर रखी थी। लेकिन 'मजाज़' पर उस समय किसी से बातें करने का भूत सवार होता था, अतएव दरवाजा खुलते ही वह सीधा हमारे सोने के कमरे की ओर लपकता। सोने के कमरे का दरवाज़ा चूंकि भीतर से बन्द होता था, इसलिए वह बाहर ही से चिल्लाकर पुकारता "हद है, अभी से सो गये !'

और यह पुकार सुनकर चार-पाँच बजे फिर सुनाई देती 'हद है, अभी तक सो रहे हो !'"[1]

१ [illegible] कि 'मजाज़' के [illegible]
[illegible]

शराबनोशी पर मेरी लगाई हुई पाबंदियो से छुटकारा पाने का 'मजाज' ने यह तरीका ढूढ निकाला था कि रात वह मेरे सोते में घर आता था और सुबह मेरे सोते मे ही घर से निकल जाता था, और कभी-कभी तो कई-कई दिन तक सिवाय अफसोसनाक खबरो के उसका कुछ अता-पता न मिलता था। उसे जानने वाले और उसे चाहने वाले उससे कन्नी कतराते, लेकिन 'मजाज' को इसका कुछ एहसास न होता। कपडे मैले हैं या फट गये, इसकी भी चिंता न थी। कितने दिन

कटुताओ से खेला और उन्ही से अपने लिए रस भी निचोडता रहा। आश्चर्य होता है कि ऐसा दु ख-भरा जीवन व्यतीत करने पर भी उसने कभी अपनी स्वाभाविक प्रफुल्लता और चुटकुलेबाजी को हाथ से न जाने दिया था।

एक बार बेतकल्लुफ मित्रो की एक महफिल मे एक ऐसे मित्र आये जिनकी पत्नी का हाल ही मे देहान्त हो गाया था और वे बहुत उदास थे। सभी मित्र उन्हे धीरज धरने को कहने लगे। एक मित्र ने तजवीज़ रखी कि दूसरी शादी तो आप करेंगे ही जल्दी क्यो नही कर लेते ताकि यह ग़म गलत हो जाए। उन महाशय ने बडी गभीरता से कहा कि जी हाँ, शादी तो मैं ज़रूर करूगा लेकिन चाहता हूँ कि किसी बेवा से करू। यह सुनना था कि 'मजाज़' ने बडी सहृदयता प्रकट करते हुए तुरन्त कहा, "भाई साहब, आप शादी कर लीजिये, वह बेचारी खुद ही बेवा हो जाएगी।"

अब कौन था जो इस भरपूर वाक्य से आनन्दित हुए बिना रह सकता। स्वय वह मित्र भी खिलखिला पडे।

इसी प्रकार एक साहित्य-सम्मेलन मे भाषण देते हुए जब एक सज्जन ने 'इकबाल' की शायरी के विभिन्न पहलुओ पर प्रकाश डालते

से अन्न नाम की कोई चीज पेट में नहीं गई, उस ओर ध्यान देने की शायद फुर्सत ही न थी। यदि कोई धुन थी तो बस यही कि कहां से, कब और कितनी मात्रा में शराब मिल सकती है! दिन-रात की निरंतर शराबनोशी का परिणाम नर्वस ब्रेकडाउन के सिवा और क्या हो सकता था, जो हुआ। किसी प्रकार पकड़-धकड़ के रांची के मेंटल हस्पताल में पहुंचाया गया, लेकिन स्वस्थ होते ही यह सिलसिला फिर से चल निकला; और यह सिलसिला ५ दिसम्बर १९५५ ई० को बलरामपुर हस्पताल, लखनऊ में उस समय समाप्त हुआ जब कुछ मित्रों के साथ 'मजाज़' ने बुरी तरह शराब पी। मित्र तो

हुए उसे पराजित तथा प्रतिक्रिया-वादी कह दिया तो श्रोताओं में से 'इन्कलाब' के किसी श्रद्धालु ने चिल्लाकर कहा "अपनी यह बकवास बन्द कीजिये। 'इन्कलाब' की रूह को सदमा पहुंच रहा है।"

[illegible] में शायद [illegible] हो जाती, लेकिन 'मजाज़' ने मुस्करा कर [illegible] में बैठे हुए कहा "जनाब! सदमा तो आपकी रूह को पहुंच रहा है, जिसे आप अभी से 'इन्कलाब' की रूह समझ रहे हैं।"

और वो पूरी सभा [illegible] उठी।

[illegible] 'मजाज़' [illegible] भी [illegible] होता [illegible]। एक बार [illegible] बोला: "क्यों मियां, [illegible]?"

[illegible]

"तो [illegible],' 'मजाज़' ने [illegible] और [illegible]।

अपने-अपने घरो को सिधारे, लेकिन 'मजाज़' रात-भर शराब-खाने की खुली छत पर सर्दी मे पडा रहा और उसके दिमाग की रग फट गई।

हमारा देश चूंकि मृत-पूजक है इसलिए 'मजाज़' की मृत्यु पर अनगिनत लेख लिखे गये। शोक सभाएँ हुईं, पत्र-पत्रिकाओ के विशेषांक निकले और उन लोगो ने भी बडा शोक मनाया जो उसकी ज़बान से उसका कलाम और चलते हुए वाक्य सुनने के लिए उसे शराब के रूप मे ज़हर पिलाया करते थे। मुझे दिल्ली की ऐसी कई महफिले याद हैं जहा ऊपर के वर्ग की सुन्दर तथा भद्र महिलाओ का झुरमुट होता था, जहा 'मजाज़' को तावड-तोड पैग पेश किये जाते थे और उससे तावड-तोड नज्में और गज़लें सुनी जाती थी। लेकिन जब मेज़बान देखते कि 'मजाज़' का सास फूल गया है, अब उससे और कुछ न सुनाया जायगा, या वह अपने आपे मे नही रहा तो वह उसे अपने ड्राइवर के हवाले कर देते थे कि उसे उसके निवास-स्थान पर छोड आए, या अगर यह प्रबंध नही होता तो अपने बंगले के किसी अलग-थलग कमरे मे बद करके बाहर से ताला डाल देते थे।

'मजाज़' की शराबनोशी के लिए मै 'मजाज़' को निर्दोष नही समझता, लेकिन उसकी ऐसी दयनीय मृत्यु मे मैं उन कृपालुओ को बराबर का दोषी समझता हूँ जिन्होने 'मजाज़' की ज़िन्दगी के हालात से वाकिफ होते हुए भी उसे पकड-पकड कर शराब पिलाई।

'मजाज़' की जिन्दगी के हालात बड़े दुखद थे। कभी पूरी अलीगढ़ यूनिवर्सिटी, जहां से उसने बी० ए० किया, उस पर जान देती थी। गर्ल्स कालिज में हर ज़बान पर उसका ज़िक्र था। उसकी आंखें कितनी सुन्दर हैं! उसका क़द कितना अच्छा है! वह क्या करता है? कहां रहता है? किसी से प्रेम तो नहीं करता—ये लड़कियों के प्रिय विषय थे और वे अपने कहकहों, चूड़ियों की खनखनाहट और उड़ते हुए दोपट्टों की लहरों में उसके शेर गुनगुनाया करती थीं। लेकिन लड़कियों का यही चहेता शायर जब १९३५ ई० में रेडियो की ओर से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'आवाज़' का सम्पादक बनकर दिल्ली आया तो एक लड़की के ही कारण उसने दिल पर ऐसा घाव खाया जो जीवन-भर अच्छा न हो सका। एक वर्ष बाद ही नौकरी छोड़कर जब वह अपने शहर लखनऊ को लौटा तो उसके सम्बन्धियों के कथनानुसार वह प्रेम की ज्वाला में बुरी तरह फुंक रहा था और उसने बेतहाशा पीनी शुरू कर दी थी। इसी सिलसिले में १९४० ई० में उस पर नर्वस ब्रेकडाउन का पहला आक्रमण हुआ और वह रट लगाये कि फ़लां लड़की मुझसे शादी करना चाहती है लेकिन रक़ीब (प्रतिद्वन्द्वी) उसे ज़हर देने की फ़िक्र में हैं। यहां यह बताना बेमौक़ा न होगा कि 'मजाज़' ने दिल्ली में एक [illegible] के घराने की अत्यन्त सुन्दर और [illegible] लड़की से प्रेम किया था, लेकिन उसके विवाहिता होने के कारण वह बेल मंढे न चढ़ सकी थी और उसने [illegible] [illegible] हुए दिल से लिखा भी था कि :

रुख़सत ऐ दिल्ली ! तेरी महफिल से अब जाता हू मैं ।
नौहागर[1] जाता हूँ मैं, नाला-ब-लब[2] जाता हू मैं ॥[3]

उपचार-चिकित्सा से मानसिक दशा सुधरी तो माता-पिता ने हृदय के घाव का इलाज करना चाहा। लडकी ! कोई सी लडकी जो उसके जीवन का सहारा बन सके, जो उसके रिसते हुए नासूर पर मरहम रख सके ! लेकिन वही लोग जिन्हे कभी 'मजाज़' को अपना दामाद बनाने की बडी अभिलाषायें थी, अवगुण गिनवाने लगे, और लडकियो को तो जैसे अब 'मजाज़' से भय आने लगा था। 'मजाज़' ने सामान्य जीवन व्यतीत करने का निश्चय किया। कुछ दिनो तक 'बम्बई इन्फर्मेशन' मे काम करता रहा। वहा से लौटा तो लखनऊ विश्वविद्यालय मे एल-एल० बी० मे दाखिला ले लिया। उन्ही दिनो 'सिब्ते-हसन' और 'सरदार जाफरी' के साथ 'नया अदब' नाम से एक प्रगतिशील पत्रिका निकाली और फिर हार्डिग लायब्रेरी दिल्ली मे एसिस्टेंट लायब्रेरियन की हैसियत से काम करने लगा। लेकिन उसी ज़माने मे, उसकी छोटी बहिन 'हमीदा सालिम' के कथनानुसार चोट पर एक और चोट पडी। घर वालो ने किसी प्रकार एक नाता तै किया और 'मजाज' ने शायद आत्म-समर्पण मे सुख अथवा मुक्ति पाने के विचार से हामी भर दी, लेकिन जब बर-दिखव्वे के तौर पर अपने ससुर की सेवा में उपस्थित हुआ तो हज़ारो

---

१ विलाप करते हुए २ होंटो पर आर्त्तनाद लिए हुए ३ यह पूरी नज्म पढने लायक है (चयन मे शामिल है)

रुपया मासिक कमाने वाले सरकारी पदाधिकारी को डेढ़ सौ रुपल्ली माहवार पाने वाले एसिस्टेंट लायब्रेरियन में कोई आकर्षण नज़र न आया। यहा एक बार फिर धन की जीत और कला की हार हुई। शायर ने एक बार दिल की आवाज़ पर कदम उठाये थे और मुह के बल गिरा था। अबके अक्ल पर भरोसा किया था, फूक-फूंक कर कदम रखा था, लेकिन फिर ठोकर खा गया और खसिया कर रो पड़ा और १९४५ ई० मे उस पर पागलपन का दूसरा हमला हुआ। अब वह स्वय ही अपनी महानता के राग अलापता था। शायरो के नामो की सूची तैयार करता था और 'गालिब' और 'इकबाल' के नाम के बाद अपना नाम लिखकर सूची समाप्त कर देता था। डाक्टरो के अनथक प्रयत्नो तथा घर वालो की जानतोड़ सेवा-शुश्रूषा से किसी प्रकार स्वास्थ्य तो प्राप्त हो गया पर जीवन का ढर्रा न बदल सका। निरंतर बेकारी और एकाकीपन का साथ रहा। शराब-नोशी बढ़ती गई। जीवन की कटुतायें बढ़ती गईं और वह उन कटुताओ को शराब मे डुबोने का असफल प्रयत्न करते-करते स्वय ही शराब मे डूब गया।

लोगों ने कहा कि 'मजाज़' का इलाज शादी है। लेकिन यह इलाज हो कैसे? 'मजाज़' की कैसे शादी हो। जहां भी घर वालों ने हाथ फैलाया उत्तर मिला कि पहले ये शराब तो छोड़ें तो छोड़ने के बाद चाहो तो कर लो। वही 'मजाज़' जो कभी उस क्षेत्र में [illegible] का केन्द्र था, [illegible]

गया। घर वाले चाहते थे कि इन निराशाओ को 'मजाज' से छुपाये रखें, लेकिन 'मजाज' को पता चल ही जाता और सिवाय इसके कि उसकी मुस्कराहट मे थोडी-सी कटुता और घुल जाती, किसी प्रकार भी यह प्रकट न होता कि वह ससार की उपेक्षा और निरादर से क्षुब्ध अथवा दुखी है। एक चुप्पी हर बात का उत्तर बन गई।

आधुनिक उर्दू शायरी का यह प्रिय और दयनीय शायर सन् १६०६ ई० मे अवध के एक प्रसिद्ध कसबे रदौली मे पैदा हुआ। पिता सिराजुल हक रदौली के पहले व्यक्ति थे जिन्होने ज़मीदार होते हुए भी उच्च शिक्षा प्राप्त की और ज़मीदारी पर सरकारी नौकरी को प्रधानता दी। यो असरारुल हक (मजाज़) का पालन-पोषण उस उभरते हुए घराने में हुआ जो एक ओर जीवन के पुरातन मूल्यो को छाती से लगाये हुए था और दूसरी ओर नये मूल्यो को भी अपना रहा था[1]। बचपन में, जैसा कि उसकी बहन 'हमीदा' ने एक जगह लिखा है, 'मजाज़' बडे सरल-स्वभाव तथा विमल-हृदय का व्यक्ति था। जागीरी वातावरण मे स्वामित्व की भावना बच्चे को मा के दूध के साथ मिलती है लेकिन वह हमेशा निर्लिप्त तथा नि स्वार्थ रहा। दूसरो की चीज़ को अपने प्रयोग मे लाना और अपनी चीज़ दूसरो को दे देना उसकी आदत रही। इस

१ इन विशेषता की झलक 'मजाज' के व्यक्तित्व मे भी थी और शायरी मे भी। उसका पूरा कलाम 'नई बोतलों मे पुरानी शराब' का साक्षी है।

के अतिरिक्त वह शुरू से ही सौन्दर्य-प्रेमी भी था। कुटुम्ब में कोई सुन्दर स्त्री देख लेता तो घंटों उसके पास बैठा रहता। खेल-कूद, खाने-पीने किसी चीज की सुध न रहती। प्रारंभिक शिक्षा लखनऊ के अमीनाबाद हाई स्कूल में प्राप्त कर जब वह आगरा के सेंट जोन्स कालिज में दाखिल हुआ तो कालिज में मुईन अहसन 'जज़्बी' और पड़ोस में 'फ़ानी' जैसे शायरों की संगत मिली और यहीं से 'मजाज़' की उस ज्योतिर्मय शायरी का प्रादुर्भाव हुआ जिसकी चमक आगरा, अलीगढ़ और दिल्ली से होती हुई समस्त भारत में फैल गई।

'मजाज़' की शायरी का प्रारम्भ बिल्कुल परम्परागत ढंग से हुआ और उसने उर्दू शायरी के मिज़ाज का सदैव ख़याल रखा। ऊपर मैं कह चुका हूँ कि 'मजाज़' को 'अख़्तर' शीरानी की मृत्यु का बड़ा शोक था और बेहोशी की हालत में भी वह उसे उर्दू का बहुत बड़ा शायर कह रहा था। वास्तविकता यह है कि 'अख़्तर' शीरानी और 'मजाज़' की शायरी की पृष्ठ-भूमि एक-सी है। मूल रूप से दोनों रोमांटिक और गीतिमय शायर हैं। यहाँ भी बेकार जीवन की निराशा है और वहाँ भी। यहाँ भी शराब है और वहाँ भी। यहाँ भी कोई-न-कोई 'सलमा' या 'रेहाना' है और वहाँ भी कोई 'ज़ोहरा-जबीं'। यहाँ भी 'नाहिद' 'सौसन' 'नर्गिस' और 'सुल्तान' के भाव भी मूल हैं और वहाँ भी। लेकिन आगे चलकर जो मोड़ 'मजाज़' को 'अख़्तर' शीरानी से अलग करती है, वह है 'मजाज़' का सुलझा हुआ बोध या विवेक।

खालिस इश्किया शायरी करते हुए भी वह अपने जीवन तथा सामान्य जीवन के प्रभावो तथा प्रकृतियो को विस्मृत नही करता। हुस्नो-इश्क का एक अलग ससार बसाने की बजाय वह हुस्नो-इश्क पर लगे सामाजिक प्रतिबधो के प्रति अपना रोष प्रकट करता है। आसमानी हूरो की ओर देखने की बजाय उसकी नज़र रास्ते के गदे लेकिन हृदयाकर्षक सौन्दर्य पर पडती है और इन दृश्यो के प्रेक्षण के बाद वह जन-साधारण की तरह जीवन के दु ख-दर्द के बारे मे सोचता है और फिर कलात्मक निखार के साथ जो शेर कहता है तो उस मे केवल किसी 'ज़ोहराजबी' से प्रेम ही नही होता, विद्रोह की झलक भी होती है। यह विद्रोह कभी वह वर्तमान जीवन-व्यवस्था से करता है, कभी साम्राज्य से, और जीवन की वचनाओ के वशीभूत कभी-कभी इतना कटु हो जाता है कि अपनी ज़ोहराजबीनो के रगमहलो तक को छिन्न-भिन्न कर देना चाहता है।

कदाचित् इसी लिए 'मजाज़' की शायरी का विवेचन करते हुए उर्दू के एक बुजुर्ग शायर 'असर' लखनवी ने एक बार लिखा था कि "उर्दू मे एक कीट्स पैदा हुआ था लेकिन इन्किलाबी भेडिये उसे उठा ले गये।"

'मजाज़' को इन्किलाबी भेडिये (प्रगतिशील लेखक) उठा ले गये या वह स्वय मिमियाती हुई भेडो के रेवड से निकल आया, इस बहस की यहा गु जाइश नही है, लेकिन इस वास्तविकता से उर्दू साहित्य का कोई पाठक इन्कार नही कर

सकता कि 'मजाज' ने जिस नज़र से व्यक्तिगत दुखों को सामाजिक पृष्ठ-भूमि मे देखा और जाचा है और यथार्थ और रोमास का संगम तलाश किया है और उसके यहा रस और चिंतन का जो सुन्दर समन्वय मिलता है वह उसकी कवित्व-शक्ति के अतिरिक्त इस बात का भी प्रमाण है कि कोई साहित्यकार केवल शून्य में जीवन व्यतीत नहीं कर सकता और न ही अपनी कल्पना के पखो पर उड़कर अधिक देर तक किसी कृत्रिम स्वर्ग मे जीवित रह सकता है।

१९३५ ई० में जबकि 'मजाज' को शेर कहते अभी केवल पाच वर्ष हुए थे और भारत मे अभी 'प्रगतिशील लेखक संघ' की नींव भी नहीं पड़ी थी, 'मजाज' ने इन शब्दों में अपना परिचय दिया था :

खूब पहचान लो 'असरार' हू मैं।
जिन्से-उल्फत का तलबगार हू मैं॥
ख्वाबे-इशरत में है अरबावे-खिरद।
और इक शायरे-बेदार हू मैं॥
ऐब जो हाफिज-ओ-खय्याम में था।
हा कुछ उसका भी गुनहगार हू मैं॥
हूरो-गिलमा का यहा ज़िक्र नहीं।
नौए-ए-इन्सा का परस्तार हू मैं॥

'हाफिज' और 'खय्याम' के ऐब का यह बेशक गुनहगार था, लेकिन नौए-ए-इन्सा (मानव) की पूजा की यही भावना हर अवसर पर उसकी सहायता करती रही। और यह कोई

साधारण बात नही है कि अपनी मस्ती और शराब-परस्ती के बावजूद और बुनियादी रूप से रोमांटिक शायर होते हुए भी, यदि हर कदम पर नही तो हर मोड़ पर, वह अवश्य जीवन की प्रगतिशील शक्तियो का साथ देता रहा है। मेरे इस दावे की दृढता के लिए 'मजाज' के निम्न-लिखित शेर देखिये जिन्हे मैं क्रमानुसार प्रस्तुत कर रहा हूँ.

हदे वो खैच रक्खी हैं हरम के पासबानो ने।
कि बिन मुजरिम बने पैगाम भी पहुँचा नही सकता॥

(१६३६)

जवानी की अंधेरी रात है ज़ुलमत का तूफा है,
मेरी राहो में नूरे-माहो-अंजुम तक गुरेजा है,
खुदा सोया हुआ है अहरमन महशर-बदामा है,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ बढता ही जाता हूँ।

(१६३७)

मुफलिसी और ये मुज़ाहिर हैं नज़र के सामने,
सैकडो सुल्ताने-जाबिर हैं नजर के सामने,
सैकडो चगेज़ो-नादिर हैं नजर के सामने,
ऐ गमे-दिल क्या करू, ऐ वहशते-दिल क्या करू ?

(१६३७)

जहने-इन्सानी ने अब औहाम की ज़ुलमात में,
ज़िंदगी की सख्त, तूफानी अंधेरी रात मे,

कुछ नहीं तो कम से कम ख्वाबे-सहर देखा तो है,
जिस तरफ देखा न था अब उस तरफ देखा तो है।

(१९३९)

बोल री ओ धरती बोल।
राज सिंहासन डावाँडोल ॥

(१९४५)

ये इन्क़िलाब का मुज़दा है इन्क़िलाब नहीं।
ये आफ़ताब का परतौ है आफ़ताब नहीं ॥

(१९४५)

सब्ज़ा-ओ-बर्गे-लाला-ओ-सर्वो-समन को क्या हुआ?
सारा चमन उदास है हाए चमन को क्या हुआ?
कोई बताये अज़मते-ख़ाके-वतन को क्या हुआ?
कोई बताए ग़ैरते-अहले-वतन को क्या हुआ?

(१९५०)

इन शेरों में हमें जन-चेतना, स्वतंत्रता-आन्दोलन, स्वतंत्रता और उसकी प्रतिक्रिया, सामाजिक क्रान्ति में कलाकारों की ज़िम्मेदारी, इत्यादि की स्पष्ट-सी झलकियाँ मिलती हैं। 'झलकियाँ' मैं इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि 'मजाज़' चाहे कितना ही बड़ा और ऊँचा ही सामयिक विषय क्यों न प्रस्तुत कर रहा हो, कला के दामन को कभी हाथ से नहीं जाने देगा, और चूँकि उसका दृष्टिकोण रोमांटिक है और उसने क्लासिकी शायरी से मुँह मोड़ने और नये प्रयोगों पर ज़ोर देने की बजाय पुरानी परम्पराओं, व्यंजनाओं तथा रूपों को नये

अर्थ पहनाये हैं इसलिए कुछेक स्थानो को छोडकर, जहा सामाजिक त्रुटियो के कटु अनुभव से वह कुछ भावुक तथा ध्वस-कारी हो गया है, सामूहिक रूप से वह सामाजिक परिवर्तन या क्रान्ति के लिए गरजता नही, गाता है, और मेरे समीप यही उसकी शायरी की सब से वडी विशेषता है।

'मजाज' के कविता-सग्रह 'आहग' की भूमिका मे उर्दू के प्रसिद्ध शायर फैज अहमद 'फैज' ने उसे क्राति के ढिढोरची की बजाय क्रान्ति के गायक की उपाधि देते हुए बिल्कुल ठीक लिखा है कि :—

" 'मजाज' की इन्किलाबियत, आम इन्किलाबी शायरो से मुख्तलिफ है। आम इन्किलाबी शायर इन्किलाब के मुतअल्लिक गरजते हैं, ललकारते हैं, सीना कूटते हैं, इन्किलाब के मुतअल्लिक गा नही सकते वो केवल इन्किलाब की हौल-नाकी(भीषणता)को देखते हैं, उसके हुस्न को नही पहचानते। यह इन्किलाव का तरक्की-पसद (प्रगतिशील) नही, रजअत-पसद (प्रतिक्रियात्मक) तसव्वुर (उद्भावना) है।"

" 'मजाज' उर्दू शायरी का कीट्स था।"

" 'मजाज़' वास्तविक अर्थो मे प्रगतिशील शायर था।"

" 'मजाज़' रस और मद्य का शायर था।"

" 'मजाज़' अच्छा शायर और घटिया शरावी था।"

" 'मजाज़' नीम-पागल लेकिन निष्कपट व्यक्ति था।"

" 'मजाज' चुटकलेवाज़ था।"

'मजाज़' को पढने वाले, 'मजाज़' से मिलने वाले, 'मजाज़'

को जानने वाले घूम-फिरकर मतों के उन्हीं बिन्दुओं पर पहुँचते हैं, लेकिन ये सब बिन्दु मिलकर एक ऐसे दिव्य केन्द्र पर आ मिलते हैं जहां 'मजाज़' और केवल 'मजाज़' अंकित है।

'मजाज़' की असामयिक मृत्यु पर उर्दू के कुछ समकालीन साहित्यकारों के मनोभाव

"....वह एक राग की तरह छूटा और फ़िज़ा की[1] तुन्दियों में फूल-सी जगमगाती हुई चिंगारियां छोड़ कर नग़मे-ज़दन में[2] गुम गया। लेकिन ये चिंगारियां उसके मुतनिब्द मजमूआ-ए-कलाम[3] में हमेशा के लिये महफ़ूज़[4] हो गई हैं। उनकी जगमगाहटें ज़िन्दगी की रातों को रोशन[5] करती रहेंगी। 'मजाज़' की मौत पर ये बातें लिखकर ऐसा महसूस कर रहा हूँ कि मैंने बेअदबी की है। शायद मौत का एहतराम[6] ख़ामोश रहकर ही किया जा सकता है।"

—'फ़िराक़' गोरखपुरी

० ० ०

" ..आज हम उस महबूब[1] शायर की मौत पर जब आंसू गिरा रहे हैं तो उसकी नज़्में, ग़ज़लें, ख़त-ख़ाल उसकी नाकामियां और नामुरादियां, सब सामने आ रही हैं। उसकी तरह दोस्ती और दोस्तनुमा दुश्मनों के चेहरे घूम रहे हैं। जीने और [illegible] करने के जो इमकान[2] हमारे [illegible]

१. [illegible] २. [illegible] ३. [illegible] ४. [illegible] ५. [illegible] ६. [illegible]

हैं, वो सामने आ रहे हैं और दिल मे इक हूक उठती है कि काश ! जिस तरह हुआ, उस तरह न होता । काश ! दुनिया इससे बेहतर होती । काश ! वह ऐसी होती कि 'मजाज़' उसमे जी सकता । जी सकता और हँस सकता और नग्मे गा सकता । हम को यकीन है कि उसका हर नग्मा इन्सानी आरज़ूओ और हौसलो का अल्बम होता ।

—हयात-उल्ला अनसारी
('कौमी आवाज़' लखनऊ)

◇ ◇ ◇

" मेरी उम्र इसी में गुज़री है और मुझे इसके बहुत मौक़े मिले हैं कि मै इन्सान को, वह शायर हो कि ग़ैर-शायर[1], परखूं और मैं यह बराबर करता रहा हू और मुझे यह कहने मे कोई ताम्मुल[2] नही कि 'मजाज़' से ज़ियादा हलीम[3] और शरीफ हस्ती उसकी नस्ल मे मुझे कोई नही मिली । 'मजाज़' की मौत एक बहुत बडे शायर और एक निहायत मासूम हस्ती की मौत है ।"

—'मजनूं' गोरखपुरी

◇ ◇ ◇

"… और उसने जवा-मर्गी[4] की रीत पूरी कर दी । जवा-मर्गी और शायरी की रीत जिसे उर्फी, शैले, कीट्स, बायरन, चेस्टरटन, काडवेल, फाक्स ने भी पूरा किया था 'मजाज़' उसी

१ जो शायर न हो २ झिझक ३ विनम्र ४ जवानी की मौत

रास्ते पर चले गये जिस पर उर्दू शायरों और अदीबों में मीर अब्दुलहई 'ताबां', दुर्गासहाय 'सरूर', पण्डित रतननाथ 'सरशार,' बनवारी लाल 'शोला,' 'अख्तर' शीरानी, सआदत हसन मन्टो गये थे। ऐ उर्दू के अज़ीमुश्शान शायर! अपने दोस्तों और कद्रदानों का सलाम ले। मौत तेरी घात में थी, तुझे ले गई, लेकिन जिन्दगी भी मौत से इन्तकाम लेना जानती है। वह तुझे मरने न देगी। वह तेरी शायरी को बकाए-दवाम[1] बख्शेगी। तेरा जिस्म मिट्टी का था, मिट्टी में मिल जायेगा। तेरे नग्मे इन्सानों की मिल्कियत हैं, जब तक इन्सानों के दिल धड़कते हैं तेरे नग्मे उन्हें इज़्तराब[2] की दौलत से माला-माल करते रहेंगे और तू जिन्दा रहेगा।

—एहतिशाम हुसैन



तुम अब हमारे दरमियान नहीं रहे हो 'मजाज़' ! और न जाने इस दुनिया को तजकर कहाँ चले गये हो—! अब तुम कभी नजर नहीं आओगे, कभी तुम्हारी मोहनी सूरत दिखाई नहीं देगी।

तुम्हारी नागहानी मौत एक ऐसा हादिसा है कि इसे संगीन-तरीन[3] हादिसा भी नहीं कहा जा सकता। इसलिए कि ये हादिसा संगीनतरीन हादिसे[4] से भी कहीं ज़्यादा [illegible][5] है।

१. [illegible] २. [illegible] ३. [illegible] ४. [illegible]
५. [illegible]

तुम्हारी मौत ने मेरे दिल की जो कैफियत कर दी है, उस कैफियत को जब अल्फ़ाज़ की[1] पुश्त पर[2] रखना चाहता हूँ तो वो हवाब की[3] तरह मुअ्‌न[4] टूट जाते हैं।

हैफ[5] उन तास्सुरात पर[6] जो फुकदाने-अल्फाज़[7] की विना पर[8] सर पीटते और गरजते रहते हैं।

मौत हम सब का तआकुब[9] कर रही है मगर ये देखकर रश्क[10] आया और कलेजा फट गया कि वो तुम तक किस कदर जल्द पहुँच गई।

एक मुद्दत से शिकायत कर रहा हू कि ओ कम्बख्त मौत ! तू मुझे क्यो नही पूछती। मैंने क्या विगाडा था तेरा कि तूने मुझसे वे-एतनाई[11] वरती, और 'मजाज़' ने क्या एहसान किया था तुम पर, ओ रूसियाह[12] ! कि तूने उसे बढकर कलेजे से लगा लिया।

'मजाज़' ! मैंने तेरे वाल्दैन को तेरा पुर्सा[13] नही दिया था। इसलिये कि उन्हे चाहिए था कि वो तेरा पुर्सा मुझे दे देते। तू उनका सिर्फ वेटा था, लेकिन तू मेरा क्या था, यह उन वदनसीवो को मालूम नही।

मेरा खयाल था कि यह चिराग जो मुझ नामुराद ने जलाया है, मेरे वाद तू इस चिराग को रोशन करेगा और

---

१ शब्दो की २ पीठ पर ३ पानी के बुलवुले की ४ तुरन्त ५ अफसोस ! ६ अनुभूतियो पर ७ शब्दो के अभाव ८ कारण ९ पीछा १० ईर्ष्या ११ उपेक्षा १२ काले मुँहवाली १३ मातमपुरसी का पत्र

मजीद[1] रोगन[2] डालकर इसकी लौ को उकसाएगा, और इस चिराग से सैकड़ों नये चिराग जलते चले जायेंगे। लेकिन सद-हैफ़[3]! कि तू ही बुझकर रह गया—मेरी उम्मीद का चिराग शायद अब कभी न जल सकेगा।

यह सच है कि यह भेड़ियों की दुनिया इस काबिल नहीं कि शायर यहां जिन्दगी बसर करे। ये सूदो-ज़ियां[4] के घुप अंधेरे में एक-दूसरे से टकराने, एक-दूसरे का खून पीने और एक-दूसरे का गोश्त खाने वाले दरिन्दे इस काबिल नहीं कि इनकी लाशों से अटी हुई ज़मीन पर शायर चले और फिरे और उन मनहूसो-नापाक सियासी अन्जुमन में शायर कदम रखे जहां नागों की गर्दनों में ज़र्री[5] तौक़[6] जगमगा रहे हैं। और यही एक ऐसी बात है जिस पर निगाह करके मैं, ऐ 'मजाज़'! तुझे मुबारकबाद देता हूं कि तू इस दुनिया से चला गया और ऐन[7] जवानी के मौसमे-बहार में चला गया।

लेकिन तेरी यह जवां-मर्गी[8] और जवां-बख्ती[9] मेरे वास्ते एक ऐसा शोला-ए-ग़म[10] छोड़ गई है जो मेरे सीने के अन्दर उस वक्त तक जलता रहेगा जब तक कि सांस चलती रहेगी।

एक तेरे सिधार जाने से मेरे दिल की बस्ती इस तरह उजड़ कर रह गई है कि अब शायद आबाद नहीं हो सकेगी। 'मजाज़'! अब तेरा भी [illegible] है, तेरी [illegible] से [illegible][11]

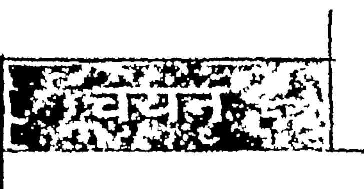
१. [illegible] २. [illegible] ३. [illegible] ४. [illegible] ५. [illegible] ६. [illegible] ७. [illegible] ८. [illegible] ९. [illegible] १०. [illegible] ११. [illegible]

ने मुझे यह बात बता दी है कि जियादा जीना बहुत बडी बेगैरती और अपने फन की[1] बहुत बडी तौहीन है ।

मेरी रात भीग चुकी है । तारे सिर पर टिमटिमा रहे हैं । बिस्तर तह कर लिया गया है, कमर बाध ली गई है और अब यह मुसाफिर भी तैयार हो चुका है ।

मजाज ! घबराना नही, 'जोश' भी आ रहा है, जल्द आ रहा है । घबराना नही ऐ 'मजाज' !

—'जोश' मलीहाबादी



तआरुफ़

ख़ूब पहचान लो असरार[1] हूं मैं।
जिन्से-उल्फ़त का[2] तलबगार हूं मैं ॥
इश्क़ ही इश्क़ है दुनिया मेरी।
फ़ित्नाए-अक़्ल से[3] बेज़ार हूं मैं ॥
ऐब जो हाफ़िज़ो-ख़य्याम में था।
हां कुछ उसका भी गुनहगार हूं मैं ॥
ज़िंदगी क्या है गुनाहे-आदम।
ज़िंदगी है तो गुनहगार हूं मैं ॥
दैरो-काबा में मेरे ही चर्चे।
और रुसवा सरे-बाज़ार हूं मैं ॥
कुफ़्रो-इलहाद से[4] नफ़रत है मुझे।
और मज़हब से भी बेज़ार हूं मैं ॥
मेरी बातों में मसीहाई[5] है।
लोग कहते हैं कि बीमार हूं मैं ॥
हूरो-ग़िलमां का यहां ज़िक्र नहीं।
नौअ़-ए-इन्सां का[6] परस्तार[7] हूं मैं ॥

---

१ असरार-उल-हक़ 'मजाज़' २. प्रेम नामक वस्तु ३. बुद्धि के उपद्रव से ४. नास्तिकता और अधर्म ५ मसीह की तरह रोगियों को स्वास्थ्य और मुर्दों को जीवन प्रदान करने की शक्ति ६. मनुष्य जाति का ७. उपासक

हर तरफ बिखरी हुई रंगीनियां रानाइयां,
हर कदम पर इशरतें[1] लेती हुई अंगड़ाइयां,
बढ़ रही है गोद फैलाए हुए रुसवाइयां,
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?
रास्ते में रुक के दम ले लूं, मेरी आदत नहीं,
लौट कर वापस चला जाऊं, मेरी फितरत नहीं,
और कोई हमनवा[2] मिल जाए, ये किस्मत नहीं,
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?
मुन्तज़िर है एक तूफ़ाने-बला[3] मेरे लिए,
अब भी जाने कितने दरवाजे हैं वा[4] मेरे लिए,
पर मुसीबत है मेरा अहदे-वफ़ा[5] मेरे लिए,
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?
जी में आता है कि अब अहदे-वफ़ा भी तोड़ दूं,
उन को पा सकता हूं मैं, ये आसरा भी तोड़ दूं,
हां मुनासिब है, ये जंजीरे-हवा[6] भी तोड़ दूं
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?
इक महल की आड़ से निकला वो पीला माहताब[7],
जैसे मुल्ला का अमामा[8], जैसे बनिये की किताब,
जैसे मुफ़लिस की जवानी, जैसे बेवा का शबाब,
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

---

१ [illegible] २. साथ गाने वाला साथी ३. विपत्तियों का तूफान ४. खुले हुए ५. प्रेम निभाने की प्रतिज्ञा ६. वासना की जंजीर (अर्थ का [illegible]) ७ चांद ८ पगड़ी

दिल मे इक शोला भडक उट्ठा है, आख़िर क्या करू ?
मेरा पैमाना छलक उट्ठा है, आख़िर क्या करू ?
ज़ख्म सीने का महक उट्ठा है, आख़िर क्या करू ?
ऐ ग़मे-दिल क्या करू, ऐ वहशते-दिल क्या करू ?
जी मे आता है ये मुर्दा चाद तारे नोच लूं,
इस किनारे नोच लूं और उस किनारे नोच लूं,
एक दो का ज़िक्र क्या, सारे के सारे नोच लूं,
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करू ?
मुफलिसी और ये मज़ाहिर[1] हैं नज़र के सामने,
सैकडो सुल्ताने-जाबिर[2] हैं नज़र के सामने,
सैकडो चगेज़ो-नादिर हैं नज़र के सामने
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करू ?
ले के इक चगेज़ के हाथो से खजर तोड दूं
ताज पर उसके दमकता है जो पत्थर तोड दूं,
कोई तोडे या न तोडे मैं ही बढ कर तोड़ दूं,
ऐ ग़मे-दिल क्या करू, ऐ वहशते-दिल क्या करू ?
बढ के इस इन्दर-सभा का साज़ो-सामा फूक दू,
इसका गुलशन फूक दू उसका शबिस्ता[3] फूक दू,
तख्ते-सुलता[4] क्या, मैं सारा क़स्रे-सुलता[5] फूक दू,
ऐ ग़मे-दिल क्या करू, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

---

१. दृश्य २ अत्याचारी बादशाह ३ शयनागार ४ शाही तख्त
५ शाही महल

एक ग़मगीन याद

मेरे पहलू-ब-पहलू जब वो चलती थी गुलिस्तां में,
फ़राज़े-आस्मां पर[1] कहकशां[2] हसरत से तकती थी ।
मुहब्बत जब चमक उठती थी उनकी चश्मे-खंदां में[3],
खुमस्ताने-फ़लक से[4] नूर की सहबा[5] बरसती थी ॥

मेरे बाज़ू पे जब वो जुल्फ़े-शबगूं[6] खोल देती थी,
ज़माना नकहते-खुल्दे-बरीं में[7] डूब जाता था ।
मेरे शाने पे जब सर रख के ठंडी सांस लेती थी,
मेरी दुनिया में सोज़ो-साज़ का तूफ़ान आता था ॥

वो मेरा शेर जब मेरी ही लै में गुनगुनाती थी,
मनाज़िर झूमते थे बामो-दर को[8] वज्द[9] आता था ।
मेरी आंखों में आंखें डालकर जब मुस्कराती थी,
मेरे जुल्मतकदे का[10] ज़र्रा-ज़र्रा जगमगाता था ॥

उमंड आते थे जब अश्के-मुहब्बत[11] उनकी पलकों तक,
टपकती थी दरो-दीवार से सोज़ी तबस्सुम थी ।
जब उनके होंट आजाते थे अज़-खुद[12] मेरे होंटों तक,
झपक जाती थी आंखें आस्मां पर माहो-अंजुम की[13] ॥

१. ऊँचे आसमान पर २. आकाश-गंगा ३. हँसती हुई आँखों में ४. आसमान की [illegible] में ५. [illegible] ६. [illegible] [illegible] ७. [illegible] की [illegible] में ८. [illegible] ९. [illegible] १०. [illegible] ११. [illegible] १२. [illegible] १३. [illegible]

वो जब हंगामे-रुख़सत[१] देखती थी मुझको मुड़-मुड़कर,
तो ख़ुद फ़ितरत के दिल में महशरे-जज़्बात[२] होता था।
वो महवे-ख़्वाब[३] जब होती थी अपने नर्म बिस्तर पर,
तो उसके सर पे मरियम का मुक़द्दस[४] हाथ होता था॥

१ विदा के समय २ मनोभावों की प्रलय ३ सोई हु
४ पवित्र

आज

कारफर्मा[1] फिर मेरा ज़ौके-गजलख्वानी[2] है आज।
फिर नफ़स का[3] साज गर्मे-शोला-अफशानी है[4] आज ॥

फिर निगाहे-शौक की[5] गर्मी है और रु-ए-निगार[6] ।
फिर अरक-आलूद[7] इक काफिर की पेशानी है आज ॥

फिर मेरे लब पर कसीदे[8] हैं लबो-रुख्सार के[9] ।
फिर किसी चेहरे पे ताबानी सी ताबानी[10] है आज ॥

हुस्न इस दर्जा निशाते-हुस्न में[11] डूबा हुआ।
अलअज़िया बेखुद शमीमे-जुल्फ[12] दीवानी है आज ॥

लर्जिशे - लब मे[13] शराबो-शेर का तूफान है।
जुंबिशे-मिज़गा मे[14] अफसूने-गजलख्वानी[15] है आज ॥

वो नफस की जमजमा-संजी[16], नजर की गुफ्तगू।
सीना-ए-मासूम मे[17] इक-तर्फा तुग़यानी[18] है आज ॥

वां इशारे हैं बहक जाना ही ऐने-होश है[19] ।
होश में रहना यकीनन सख्त नादानी है आज ॥

---

१. काम करने वाला २. गीत गाने की रुचि ३. [illegible] ४. जोश दिखा रहा है ५. प्रेम भरी नजर की ६. प्रेमी का मुखड़ा ७. पसीने-पसीने ८. स्तुति-गान ९. होंठों और कपोलों के १०. आभा ११. सौन्दर्य की मस्ती में १२. केशों की सुगन्ध १३. होंठ की थरथराहट में १४. पलकों के हिलने में १५. ग़ज़ल-गान [illegible] १६. [illegible] १७. मासूम हृदय में १८. बाढ़ १९. यहाँ बहकने में होश है।

कश्मकश सी कश्मकश में है मज़ाके-आशिकी।
कामरा सी कामरा[१] हर सअी-ए-इमकानी[२] है आज ॥
हुस्न के चेहरे पे है नूरे-सदाकत की[3] दमक।
इश्क के सर पर कुलाहे-फख्र-इन्सानी[४] है आज ॥
शौक से[५] मौका-शनासी की तवक्को भी गलत।
मैंने उनकी शक्ल भी मुश्किल से पहचानी है आज ॥

---

१ सफल, भाग्यवान २ सम्भव चेष्टा ३ सत्य के तेज की
४. मनुष्यता के गौरव का ताज ५ दरन से

अंधेरी रात का मुसाफ़िर

जवानी की अंधेरी रात है ज़ुल्मत का[1] तूफ़ाँ है,
मेरी राहों से नूरे-माहो-अंजुम[2] तक गुरेज़ाँ है,
ख़ुदा सोया हुआ है, अहरमन[3] महशर-बदामाँ[4] है,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ।

ग़मो-हिरमाँ की[5] यूरिश[6] है, मसायब की[7] घटायें हैं,
जुनूँ की[8] फ़ित्नाख़ेज़ी,[9] हुस्न की ख़ूनीं अदायें हैं,
बड़ी पुरज़ोर आँधी है, बड़ी काफ़िर बलायें हैं,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ।

फ़ज़ा में मौत के तारीक[10] साये थरथराते हैं,
हवा के सर्द झोंके क़ल्ब पर[11] ख़ंजर चलाते हैं,
गुज़श्ता इशरतों के[12] ख़्वाब आईना दिखाते हैं,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ।

ज़मीं चीं-बर-जबीं[13] है आस्माँ तख़रीब पर[14] मायल,
रफ़ीक़ाने-सफ़र में कोई बिस्मिल[15] है, कोई घायल,
तआक़ुब में लुटेरे हैं, चटानें राह में हायल,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ।

---

१. अन्धकार का २. चाँद-सितारों का प्रकाश ३. शैतान ४. प्रलय समेटे हुए ५. दुखों और निराशाओं की ६. आक्रमण ७. मुसीबतों की ८. उन्माद की ९. उपद्रव १० अँधेरे ११. हृदय पर १२. सुख-भोगों १३ माथे पर बल डाले हुए १४. विनाश पर १५ घायल

कश्मकश सी कश्मकश में है मज़ाके-आशिकी।
कामरा सी कामरा[1] हर सई-ए-इमकानी[2] है आज॥

हुस्न के चेहरे पे है नूरे-सदाकत की[3] दमक।
इश्क के सर पर कुलाहे-फख्रे-इन्सानी[4] है आज॥

शौक से[5] मौका-शनासी की तवक्को भी गलत।
मैंने उनकी शक्ल भी मुश्किल से पहचानी है आज॥

---

१ सफल, भाग्यवान २. सम्भव चेष्टा ३ सत्य के तेज की
४ मनुष्यता के गौरव का ताज ५ इच्छा से

अंधेरी रात का मुसाफ़िर

जवानी की अधेरी रात है जुलमत का[1] तूफाँ है,
मेरी राहो से नूरे-माहो-अंजुम[2] तक गुरेजा है,
खुदा सोया हुआ है, अहरमन[3] महशर-वदामा[4] है,
मगर मै अपनी मज़िल की तरफ वढ़ता ही जाता हू।

गमो-हिरमा की[5] यूरिश[6] है, मसायब की[7] घटायें है,
जुनू की[8] फित्नाखेजी,[9] हुस्न को खूनी अदायें हैं,
वडी पुरज़ोर आंधी है, वड़ी काफिर वलाये है,
मगर मै अपनी मज़िल की तरफ वढता ही जाता हूं।

फ़ज़ा मे मौत के तारीक[10] साये थरथराते है,
हवा के सर्द झोके कल्व पर[11] खजर चलाते है,
गुजश्ता इश्रतो के[12] ख्वाव आईना दिखाते है,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ वढ़ता ही जाता हू।

ज़मी ची-बर-जवी[13] है आस्मां तखरीव पर[14] मायल,
रफीकाने-सफर मे कोई विस्मिल[15] है, कोई घायल,
तआकुव मे लुटेरे है, चटानें राह मे हायल,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ वढ़ता ही जाता हूं।

---

१. अधकार का २ चाद सितारो का प्रकाश ३ शैतान ४. प्रलय मचाये हुए ५ दुखो और निराशाओ की ६ आक्रमण ७ आपत्तियो की ८. उन्माद की ९. उपद्रव १० काले ११. हृदय पर १२ सुख-भोग १३. माथे पर वल डाले हुए १४ विनाश पर १५ आहत

उफक पर[1] ज़िन्दगी के लश्करे-ज़ुलमत का डेरा है,
हवादिस के[2] कयामत-खेज़ तूफानो ने घेरा है,
जहा तक देख सकता हू, अधेरा ही अधेरा है,
मगर मैं अपनी मज़िल की तरफ बढता ही जाता हू।

चिरागे-दैर[3] फानूसे-हरम[4] कदीले-रहबानी[5],
ये सब हैं मुद्दतो से बेनियाज़े-नूरे-इर्फानी[6],
न नाकूसे-बिरहमन[7] है, न आहगे-हुदो-ख्वानी[8],
मगर मैं अपनी मज़िल की तरफ बढता ही जाता हूँ।

तलातुम-खेज[9] दरिया, आग के मैदान हायल हैं,
गरजती आधिया, बिफरे हुए तूफान हायल है,
तबाही के फरिशते, जब्र के शैतान हायल है,
मगर मैं अपनी मज़िल की तरफ बढता ही जाता हूँ।

फज़ा मे शोला-अफशा[10] देवे-इस्तब्दाद का[11] खजर,
सियासत के सनानी[12] अहले-ज़र के[13] खूचका[14] तेवर,
फरेबे-बेखुदी देते हुए बिल्लौर के[15] सागर,
मगर मैं अपनी मज़िल की तरफ बढता ही जाता हूँ।

---

१ क्षितिज पर २ दुर्घटनाओ के ३ मन्दिर का दीपक ३. काबे का फानूस ५ गिर्जाघर की मोमबत्ती ६ ब्रह्म-ज्ञान की ज्योति से बेपरवाह ७ ब्राह्मण के शख (फूकने की आवाज) ८ (मुल्ला के) कुरान पढने का आलाप ९ तूफानी १० शोले बखेर रहा ११ अत्याचार-रूपी देव का १२ नोकीले १३ पूजीपतियो के १४ जिन से लहू टपक रहा है १५ बिल्लौरी शीशे के

बदी पर बारिशे - लुत्फ़ो - करम, नेकी पे तकरीरे,
जवानी के हसी ख्वाबों की हैबतनाक ताबीरें[१],
नुकीली तेज़ संगीने हैं खून-आशाम[२] शमशीरें,
मगर मै अपनी मज़िल की तरफ बढता ही जाता हूं।

हुकूमत के मजाहिर[३] जग के पुरहौल नक्शे हैं,
कुदालों के मुकाबिल तोप, बंदूके हैं, नेजे है,
सलासिल,[४] ताज़ियाने,[५] बेडियाँ, फांसी के तख्ते हैं,
मगर मै अपनी मजिल की तरफ़ बढता ही जाता हूं।

उफक पर जग का खूनी सितारा जगमगाता है,
हर इक झोका हवा का मौत का पैगाम लाता है,
घटा की घन-गरज से कल्बे-गेती[६] कांप जाता है,
मगर मे अपनी मज़िल की तरफ बढ़ता ही जाता हूं।

फना के आहनी वहशत-असर[७] क़दमों की आहट है,
धुएं की बदलियां है गोलियो की सनसनाहट है,
अजल के[८] कहक़हे हैं ज़लज़लो की गड़गड़ाहट है,
मगर मे अपनी मंज़िल की तरफ बढ़ता ही जाता हूं।

---

१ स्वप्न-फल २ लहू पीने वाली ३. प्रदर्शन ४ जजीरें
५ कोडे ६. ससार का हृदय ७. भीषण ८ काल के

साकी

मेरी मस्ती मे भी अब होश ही का तौर[1] है साकी,
तेरे सागर में ये सहबा[2] नही कुछ और है साकी।

भडकती जा रही है दम-ब-दम इक आग-सी दिल मे,
ये कैसे जाम हैं साकी, ये कैसा दौर है साकी ?

वो शै दे जिससे नीद आजाये अक्ले-फित्ना-परवर को[3],
कि दिल आजुर्दहे-तमईज़े-लुत्फो-जोर[4] है साकी।

जवानी और यू घिर जाये तूफाने - हवादिस मे[5] ,
खुदा रक्खे अभी तो बेखुदी का दौर है साकी।

छलकती है जो तेरे जाम से उस मै का क्या कहना,
तेरे शादाब होंटों की मगर कुछ और है साकी।

मुझे पीने दे, पीने दे कि तेरे जामे-लअली में[6] ,
अभी कुछ और है, कुछ और है, कुछ और है साकी।

---

१ रग-ढग २ अगूरी शराब ३ उपद्रव खडे करने वाली बुद्धि को ४ अनुकम्पा और अत्याचार के भेद से अनभिज्ञ ५ दुर्घटनाओ के तूफ़ान मे ६ लाल रग के प्याले (होंटो) मे

किस से मुहब्बत है ?

वताऊ क्या तुझे, ऐ हमनशी[1] ! किससे मुहब्बत है ?
मैं जिस दुनिया मे रहता हू वो उस दुनिया की औरत है,
सरापा[2] रंगो-बू है पैकरे-हुस्नो-लताफत[3] है,
बहिश्ते-गोश[4] होती हैं गुहर-अफशानियां[5] उसकी।

वो मेरे आस्मां पर अख्तरे-सुवहे-कयामत[6] है,
सुरैया-वख्त[7] है, जोहरा-जवी[8] है, माहे-तलअत[9] है,
मेरा ईमा है, मेरी जिन्दगी है, मेरी जन्नत है,
मेरी आखो को खीरा[10] कर गई तावानिया[11] उसकी।

वो इक मिज़राव है और छेड़ सकती है रगे-जा को,
वो चिंगारी है लेकिन फूक सकती है गुलिस्तां को,
वो विजली है जला सकती है सारी वज्मे-इमका को[12],
अभी मेरे ही दिल तक हैं शरर-सामानिया उसकी।

ज़ुबां पर हैं अभी तक इस्मतो-तकदीस के[13] नग्मे,
वो वढ जाती है इस दुनिया से अक्सर इस कदर आगे,
मेरी तखईल के[14] वाजू भी उसको छू नही सकते,
मुझे हैरान कर देती हैं नुक्ता-दानियां-उसकी।

---

१ साथी २ सिर से पांव तक ३ सौन्दर्य तथा मृदुलता की प्रतिमा ४ कानो का स्वर्ग ५ मोती विखेरना (वातें) ६ प्रलय की प्रभात का सितारा ७, ८, ९ चाद तारे जैसे चेहरे वाला १० चौंधिया गई ११ आभा १२. ससार को १३. सतीत्व तथा पवित्रता के १४ कल्पना के

अदायें लेके आई है वो फितरत के खज़ानो से,
जगा सकती है महफिल को नजर के ताज़ियानो से[1] ,
वो मलिका है ख़िराज उसने लिये हैं बोस्तानो से[2] ,
बस इक मैंने ही अक्सर की हैं नाफरमानिया उसकी ।

वो मेरी जुरंतो पर बेनियाज़ी की सज़ा देना,
हवस की ज़ुल्मतो पर[3] नाज़ की बिजली गिरा देना,
निगाहे - शौक की बेबाकियो पर मुस्करा देना,
ज़ुनूं को दर्स - तमकी[4] दे गई नादानिया उसकी ।

वफा खुद की है और मेरी वफा को आजमाया है,
मुझे चाहा है, मुझको अपनी आखो पर बिठाया है,
मेरा हर शेर तनहाई मे उसने गुनगुनाया है,
सुनी हैं मैंने अक्सर छुप के नग्मा-ख्वानिया[5] उसकी ।

मेरे चेहरे पे जब भी फिक्र के आसार[6] पाये है,
मुझे तस्कीन दी है मेरे अदेशे मिटाये हैं,
मेरे शाने पे सर तक रख दिया है, गीत गाये हैं,
मेरी दुनिया बदल देती हैं खुशअलहानिया[7] उसकी ।

लबे-लाली पे[8] लाखा है न रुखसारो पे[9] ग़ाज़ा है,
जबीने - नूर-अफशा पर[10] न झूमर है न टीका है,
जवानी है सुहाग उसका तबस्सुम उसका गहना है,
नही आलूदा-ए-ज़ुल्मत[11] सहर-दामानिया[12] उसकी ।

---

१ कोड़ो से २ बागो से ३ अन्धेरों पर ४ सहनशीलता का पाठ ५ गीत गाना ६ चिह्न ७ मधुर आवाजें ८ लाल होंटो पर ९ कपोलो पर १० आभा-पूर्ण माथे पर ११ अन्धकार मिश्रित १२ जादू

कोई मेरे सिवा उसका निशां पा ही नही सकता,
कोई उस बारगाहे-नाज़[1] तक जा ही नही सकता,
कोई उसके जुनू का ज़मज़मा[2] गा ही नही सकता,
झलकती है मेरे अशआर मे जौलानियां[3] उसकी।

---

१. नाज़ (सुन्दरी) की राज-सभा २. गान ३. जवानी का जोश

ख़्वाबे-सहर[१]

मेहर[२] सदियो से चमकता ही रहा अफलाक पर[३] ,
रात ही तारी रही इन्सान के इदराक पर[४] ।

अक्ल के मैदान में ज़ुल्मत का[५] डेरा ही रहा,
दिल मे तारीकी, दिमागो में अंधेरा ही रहा ।

इक न इक मज़हब की सअइ-ए-खाम[६] भी होती रही,
अहले-दिल पर बारिशे-इलहाम[७] भी होती रही ।

आस्मानो से फरिश्ते भी उतरते ही रहे,
नेक बंदे भी खुदा का काम करते ही रहे ।

इब्ने-मरियम[८] भी उठे, मूसाए-ए-इम्रा[९] भी उठे,
रामो-गौतम भी उठे, फरऊनो-हामा भी उठे ।

अहले-सैफ[१०] उठते रहे, अहले-किताब[११] आते रहे,
ईंजनाब उठते रहे और आजनाब आते रहे ।

हुक्मरा दिल पर रहे सदियो तलक असनाम[१२] भी,
अब्रे-रहमत[१३] बन के छाया दहर पर[१४] इस्लाम भी ।

---

१ सुबह का सपना २ सूर्य्य ३ आकाश पर ४ बोध, ज्ञान पर ५ अंधकार का ६ विफल प्रयास ७ दैवी प्रेरणा की वर्षा ८ मरियम के बेटे (ईसा) ९ हज़रत मूसा १० तलवार के धनी ११ धार्मिक (पवित्र) ग्रंथ रखने वाले (हज़रत मोहम्मद आदि) १२ मूर्तियां, बुत १३ कृपा का बादल १४ संसार पर

मस्जिदो मे मौलवी खुत्बे सुनाते ही रहे,
मन्दिरो मे विरहमन श्रश्लोक गाते ही रहे।

श्रादमी मिन्नतकशे-श्ररबाबे-इर्फा ही रहा[1],
दर्दे-इन्सानी मगर महरूमे-दर्मा[2] ही रहा।

इक न इक दर पर जबीने-शौक[3] घिसती ही रही,
श्रादमियत जुल्म की चक्की मे पिसती ही रही।

रहबरी जारी रही, पैगम्बरी जारी रही,
दीन के पर्दे मे जंगे-जरगरी जारी रही।

श्रहले-बातिन[4] इल्म से सीनो को गर्माते रहे,
जिहल के[5] तारीक साये हाथ फैलाते रहे।

ये मुसलसल श्राफ़ते, ये यूरिशे[6], ये कत्ले-श्राम,
श्रादमी कब तक रहे श्रौहामे-बातिल का[7] गुलाम।

ज़हने-इन्सानी ने[8] श्रब श्रौहाम के जुलमात मे[9],
ज़िन्दगी की सख्त तूफानी श्रंधेरी रात में।

कुछ नही तो कम-से-कम ख्वाबे-सहर देखा तो है।
जिस तरफ देखा न था श्रब तक उधर देखा तो है॥

---

१. देवताश्रो का कृपाकाक्षी २ उपचार से वचित ३ इश्क श्रथवा श्राकाक्षा का माथा ४ ब्रह्मज्ञानी ५. श्रज्ञानता के ६. श्राक्रमण ७ मिथ्या भ्रमो का ८. मानव-मस्तिष्क ने ९ भ्रमो के श्रंधेरे मे

मजबूरियां

मैं आहें भर नही सकता कि नग्मे गा नही सकता ?
सुकूं लेकिन मेरे दिल को मुयस्सर आ नही सकता।
कोई नग्मे तो क्या अब मुझसे मेरा साज भी ले ले,
जो गाना चाहता हू आह, वो मै गा नही सकता।
मताए-सोज़ो-साज़े-जिंदगी[1], पैमाना-ओ-बरबत[2],
मै खुद को इन खिलौनो से भी अब बहला नही सकता।
वो बादल सर पे छाए हैं कि सर से हट नही सकते,
मिला है दर्द वो दिल को कि दिल से जा नही सकता।
हवसकारी[3] है जुर्मे-खुदकुशी मेरी शरीअत में[4],
ये हद्दे-आखिरी है मै यहां तक जा नही सकता।
न तूफा रोक सकते हैं न आधी रोक सकती है,
मगर फिर भी मै उस कस्रे-हसी[5] तक जा नही सकता।
वो मुझको चाहती है और मुझ तक आ नही सकती,
मैं उमको पूजता हू और उमको पा नही सकता।
ये मजबूरी सी मजबूरी, ये लाचारी सी लाचारी,
कि उसके गीत भी जी खोलकर मै गा नही सकता।

---

१ जीवन के सोज और साज (दुख-सुख) की निधि २ शराब का प्याला और बरबत (एक बाजा) ३ लोलुपता ४ धर्म-शास्त्र मे ५ सुन्दर भवन (महल)

जुबा पर बेखुदी मे नाम उसका आ ही जाता है,
अगर पूछे कोई, ये कौन है ? बतला नही सकता ।

कहां तक किस्साए-आलामे-फुरकत,[1] मुख्तसर ये है,
यहां वो आ नही सकती, वहा मै जा नही सकता ।

हदे वो खैच रक्खी हैं हरम के पासबानो ने,
कि बिन मुजरिम बने पैगाम भी पहुँचा नही सकता ।

---

१. विरह के दुखो की कहानी

आज की रात

देखना जज्बे-मुहब्बत का[1] असर आज की रात,
मेरे शाने पे है उस शोख का सर आज की रात।
और क्या चाहिए अब ऐ दिले-मजरूह[2] तुझे,
उसने देखा तो ब-अदाजे-दिगर[3] आज की रात।
फूल क्या खार[4] भी हैं आज गुलिस्ता-ब-किनार[5],
सगरेज़े[6] हैं निगाहो मे गुहर[7] आज की रात।
महवे-गुलगश्त[8] है ये कौन मेरे दोश-ब-दोश[9],
कहकशा[10] बन गई हर राहगुज़र आज की रात।
शबनमिस्ताने-तजल्ली का[11] फुसू[12] क्या कहिये,
चाद ने फेंक दिया रख्ते-सफर[13] आज की रात।
नूर ही नूर है, किस सिम्त उठाऊ आखें,
हुस्न ही हुस्न है ताहद्दे-नजर[14] आज की रात।
अल्ला-अल्लाह वो पेशानी-ए-सीमी का[15] जमाल[16],
रह गई जम के सितारो की नज़र आज की रात।
आरिज़े-गर्म पे[17] वो रगे-शफक को[18] लहरें,
वो मेरी शोख-निगाही का असर आज की रात।

---

१ प्रेमाकर्षण २ घायल-हृदय ३ अन्य ढग से ४ काँटे ५ बाग़ को प्यारे ६ पत्थर के टुकडे ७ मोती ८ पुष्प-विहार मे तन्मय ९ कधे से साथ कधा मिलाये हुए १० आकाश-गगा ११ प्रेमिका के मुखड़े का १२ जादू १३ यात्रा की सामग्री १४ जहा तक नजर जा सकती है १५ रजत माथा १६ रूप, सौन्दर्य १७ गर्म कपोलो पर १८ सान्ध्य लालिमा की

नर्गिसे-नाज़ में[1] वो नींद का हल्का-सा खुमार,
वो मेरे नग़्म-ए-शोरी का[2] असर आज की रात।
नग़मा-ओ-मै का ये तूफ़ाने-तरब[3] क्या कहिये,
घर मेरा बन गया 'ख़य्याम' का घर आज की रात।
मेरी हर सांस पे वो उनकी तवज्जह, क्या खूब!
मेरी हर बात पे वो जुंबिशे-सर[4] आज की रात।
उफ़ वो वारफ़्तगी-ए-शौक में[5] इक वहमे-लतीफ़[6],
कपकपाते हुए होंटों पे नज़र आज की रात।
अपनी रफ़्अ़त पे[7] जो नाज़ां[8] हैं तो नाज़ां ही रहे,
कह दो अंजुम से[9] कि देखें न इधर आज की रात।
उनके अल्ताफ़ का[10] इतना ही फुसूं[11] काफ़ी है,
कम है पहले से बहुत दर्दे-जिगर आज की रात।

---

१. प्रेयसी की नर्गिसी आंखों में २. मधुर-गीत ३ हर्ष का तूफान ४. सिर हिलाकर हामी भरना ५ प्रेमोन्माद ६ सुन्दर भ्रम ७. उच्चता पर ८ गर्वीले ९. सितारों से १०. कृपाओं का ११. जादू

वतन आशोब[1]

सब्ज़ा-ओ-बर्गो-लाला-ओ-सर्वो-समन को[2] क्या हुआ ?
सारा चमन उदास है, हाए चमन को क्या हुआ ?

एक सुकूत[3] हर तरफ होश-रुबा[4] व हौलनाक,
खुल्दे-वतन के[5] पासबा, खुल्दे-वतन को क्या हुआ ?

रक्से-तरब[6] किधर गया, नग्मा-तराज़[7] क्या हुए ?
गम्ज़ा-ओ-नाज[8] क्या हुए अश्वा-ओ-फन को[9] क्या हुआ ?

जिसकी नवाए-दिलसिता[10] ज़म्हा-ए-साज़े-शौक[11] थी,
कोई बताओ उस बुते-गु चा-दहन को[12] क्या हुआ ?

छाई है क्यो फसुर्दगी[13] आलमे-हुस्नो-इश्क पर[14],
आज वो 'नल' किधर गये आज 'दमन' को क्या हुआ ?

आखो मे खौफो-यास[15] है चेहरा उदास-उदास है,
अस्र-रवा की[16] लैला-ए-बुर्का-फिगन को[17] क्या हुआ ?

---

१ अशान्ति, कोलाहल २ फूल पत्ती आदि (देशवासियो) को ३ चुप्पी ४ होश उडाने वाला ५ देश रूपी स्वर्ग के ६ खुशी का नाच ७ गायक ८ कटाक्ष, हाव-भाव इत्यादि ९ छवि और रग्मा १० हृदयाकर्षक स्वर ११ इश्क के साज का मधुर सगीत १२ कलि के से मुह वाली प्रेयसी को १३ उदासी १४. सौन्दर्य तथा प्रेम के ससार पर १५ भय तथा निराशा १६ आधुनिक काल की १७ लैला जिसने चेहरे पर से नकाब उतार रखा है

आह खिरद[1] किधर गई, आह जुनूं ने क्या किया ?
आह शबाबे-खूगरे-दारो-रसन को[2] क्या हुआ ?

कोई बताये अज्मते-खाके-वतन[3] कहां है अब ?
कोई बताये गैरते-अहले-वतन को[4] क्या हुआ ?

कोह[5] वही, दमन[6] वही, दश्त[7] वही, चमन वही,
फिर ये 'मजाज' जज्बए-हुब्बे-वतन को[8] क्या हुआ ?

१. बुद्धि २ सूली और फासी के अभ्यस्त यौवन को
३ देश की मिट्टी की महानता ४ देशवासियो के स्वाभिमान को
५. पहाड़ ६. वीराना ७. जगल ८ देश-प्रेम की भावना को

रात और रेल

फिर चली है रेल इस्टेशन से लहराती हुई,
नीम शव की[1] खामशी मे ज़ेरे-लब[2] गाती हुई।
डगमगाती, झूमती, सीटी बजाती, खेलती,
वादी-ओ-कोहसार की[3] ठडी हवा खाती हुई।
तेज़ झोको मे वो छम-छम का सरोदे-दिलनशी[4],
आधियो मे मेह बरसने की सदा आती हुई।
जैसे मौजो का तरन्नुम[5] जैसे जल-परियो के गीत,
एक इक लै मे हज़ारो ज़मज़मे[6] गाती हुई।
नौनिहालो को सुनाती मीठी-मीठी लोरिया,
नाज़नीनो को[7] सुनहरे ख्वाब दिखलाती हुई।
ठोकरें खाकर, लचकती, गुनगुनाती, झूमती,
सरखुशी में घुघरुओ की ताल पर गाती हुई।
नाज से हर मोड पर खाती हुई सौ पेचो-खम,
इक दुल्हन अपनी अदा से आप शर्माती हुई।
रात की तारीकियो में झिलमिलाती, कापती,
पटरियो पर दूर तक सीमाव[8] छलकाती हुई।
जैसे आधी रात को निकली हो इक शाही बरात,
शादियानो की सदा से वज्द मे[9] आती हुई।

---

१ आधी रात की २ होंटो ही होंटो मे ३. घाटियो और पर्वतो की ४ हृदयस्पर्शी सगीत ५ गुंजार, सगीत ६ गीत ७ सुकुमारियो को ८ पारा ९ मस्ती मे

मुन्तशिर करके[1] फ़ज़ा में जा-ब-जा चिंगारियां,
दामने-मौजे-हवा मे[2] फूल बरसाती हुई।
तेज़तर होती हुई मज़िल-ब-मज़िल दम-ब-दम,
रफ्ता-रफ्ता अपना असली रूप दिखलाती हुई।
सीना-ए-कोहसार पर[3] चढ़ती हुई बेअख्तियार,
एक नागन जिस तरह मस्ती में लहराती हुई।
इक सितारा टूटकर जैसे रवां[4] हो अर्श पर[5],
रफअते - कोहसार से[6] मैदान में आती हुई।
इक बगूले की तरह बढती हुई मैदान मे,
जंगलो मे आंधियो का ज़ोर दिखलाती हुई।
याद आ जाये पुराने देवताओ का जलाल,
इन कयामत-खेज़ियो के साथ बल खाती हुई।
एक रख्शे-बेइनां की[7] बर्क़-रफ्तारी के[8] साथ,
खदको को फांदती, टीलो से कतराती हुई।
मर्गज़ारो मे[9] दिखाती जूए-शीरी का[10] खिराम[11],
वादियों में अब्र के[12] मानिंद मडलाती हुई।
इक पहाडी पर दिखाती आबशारो की झलक,
इक बियाबां मे चिराग़े-तूर दिखलाती हुई।

---

१. बिखेरकर २. वायु की लहरो के आँचल मे ३. पर्वत की छाती पर ४ गतिशील ५. आकाश पर ६. पर्वत के शिखर पर से ७ ऐसा घोडा जिसके मुँह में लगाम न हो ८. बिजली की-सी तेज़ी के ९. हरे-भरे जगलो मे १० मीठे पानी की नदी ११. मंद-गति १२. बादलो के

जुस्तजू मे मजिले - मक्सूद की दीवानावार,
अपना सर धुनती फज़ा में बाल बिखराती हुई।
छेडती इक वज्द के आलम मे साज़े-सरमदी[१],
गैज़ के[२] आलम मे मुह से आग बरसाती हुई।
रेंगती, मुडती, मचलती, तिलमिलाती, हांपती,
अपने दिल को आतिशे-पिनहा को[३] भडकाती हुई।
खुद-ब-खुद रूठी हुई, बिफरी हुई, बिखरी हुई,
शोरे-पैहम से[४] दिले-गेती को[५] धडकाती हुई।
पुल पे दरिया के दमादम कौंदती ललकारती,
अपनी इस तूफान - अगेज़ी पे इतराती हुई।
पेश करती बीच नद्दी में चिरागा का[६] समा,
साहिलो पर रेत के ज़र्रो को चमकाती हुई।
मुह में घुसती है सुरगो के यकायक दौडकर,
दनदनाती, चीखती, चिंघाडती, गाती हुई।
आगे आगे जुस्तजू - आमेज़[७] नज़रें डालती,
शब के हैबतनाक[८] नज़्ज़ारो से घबराती हुई।
एक मुजरिम की तरह सहमी हुई, सिमटी हुई,
एक मुफलिस की तरह सर्दी मे थर्राती हुई।
तेज़ी-ए-रफ्तार के सिक्के जमाती जा-ब-जा,
दश्तो-दर में[९] ज़िन्दगी की लहर दौडाती हुई।

---

१ अमर सगीत २ प्रकोप के ३ निहित ज्वाला को ४ निरतर शोर ५ ससार के हृदय को ६ दीपमाला का ७ जिज्ञासा-पूर्ण ८ भयानक ९ जगलो और दरवाज़ो (आबादियो) मे

सफ़्हा-ए-दिल से[1] मिटाती अहदे-माज़ी के[2] नक़ूश[3],
हालो-मुस्तकबिल के[4] दिलकश ख़्वाब दिखलाती हुई।
डालती बेहिस चटानो पर हिकारत की नज़र,
कोह पर हसती फलक को[5] आंख दिखलाती हुई।
दामने - तारीकी - ए - शब की[6] उड़ाती धज्जियां,
कस्रे-जुल्मत पर[7] मुसलसल तीर बरसाती हुई।
ज़द मे कोई चीज आ जाये तो उसको पीस कर,
इर्तिका-ए - ज़िन्दगी के[8] राज़ बतलाती हुई।
ज़ोम मे[9] पेशानी-ए-सहरा पे[10] ठोकर मारती,
फिर सुबक-रफ़्तारियो के[11] नाज़ दिखलाती हुई।
एक सरकश फौज की सूरत अ़लम[12] खोले हुए,
एक तूफ़ानी गरज के साथ दर्राती हुई।
हर क़दम पर तोप की सी घन-गरज के साथ-साथ,
गोलियों की सनसनाहट की सदा आती हुई।
वो हवा मे सैकड़ों जगी दुहल[13] बजते हुए,
वो बिगुल की जाफजा आवाज़ लहराती हुई।
अलगरज़[14] उड़ती चली जाती है बेख़ौफ़ो-ख़तर,
शायरे-आतिशनफस का[15] ख़ून खौलाती हुई।

---

१. हृदय-रूपी पृष्ठ पर से २. भूतकाल के ३. चित्र ४. वर्तमान तथा भविष्य के ५. आकाश को ६ रात के अन्धकार के आचल की ७ अन्धकार के महल पर ८. जीवन के विकास के ९. गर्व में १० मरुस्थल के माथे पर ११ मद गति के १२. पताका १३. ढोल, नक्क़ारे १४ तात्पर्य यह कि १५. अग्नि-भाषी कवि

शौके-गुरेज़ां[1]

देरो-कावा का[2] मैं नही कायल,
देरो-कावा को आस्ता[3] न बना।
मुझमे तू रूहे-सरमदी[4] मत फूंक,
रौनके-बज़्मे-आरिफा[5] न बना।
दश्ते - ज़ुलमात मे[6] भटकने दे,
मेरी राहो को कहकशा[7] न बना।
इश्रते-जहलो-तीरगी[8] मत छीन,
महरमे-राज़े-दो-जहा[9] न बना।
विजलियो से जहा न हो चशमक[10],
उस गुलिस्ता में आशिया न बना।
मेरी जानिब निगाहे-लुत्फ न कर,
गम को इस दर्जा कामरा[11] न बना।
इस ज़मी को ज़मी ही रहने दे,
इस ज़मी को तू आस्मा न बना।
राज़ तेरा छुपा नही सकता,
मुझे तू अपना राज़दा न बना।

---

१ विरक्ति की उत्कंठा २ मन्दिर और काबा ३ चौखट, दहलीज ४ अनश्वर आत्मा ५ ब्रह्मज्ञानियो की सभा की शोभा ६ अंधकार (अज्ञान) के जगल मे ७ आकाश-गंगा ८ अज्ञानता का सुख-भोग ९ दोनो लोको के रहस्य का जानकार १० छेड़छाड़ ११ सफल

इधर भी आ

ये जहदो-कश्मकश[१] ये ख़रोशे-जहां[२] भी देख,
इदबार की[३] सरो पे घनी बदलियां भी देख,
ये तोप, ये तुफग, ये तेगो-सिना[४] भी देख,
ओ कुश्ता-ए-निगारे-दिल-आरा[५] इधर भी आ !

आ और बिगुल का नग्मा-ए-जांआफरी[६] भी सुन,
आ बेकसो का नाला-ए-अदोहगी[७] भी सुन,
आ बागियो का ज़मज़मा-ए-आतशी[८] भी सुन,
ओ मस्ते-साज़ो-बरबतो-नग्मा[९] इधर भी आ !

तकदीर कुछ हो, काविशे-तदबीर[१०] भी तो है,
तख़रीब के[११] लिबास मे तामीर[१२] भी तो है,
ज़ुल्मात[१३] के हिजाब मे[१४] तनवीर[१५] भी तो है,
आ मुन्तजिर है इश्रते-फ़र्दा[१६] इधर भी आ !

---

१ पराक्रम और सघर्ष २ ससार का कोलाहल ३. सकटो की ४ तलवार और भाले ५ हृदय को सुशोभित करने वाली (हृदयाकर्षक) प्रेयसी द्वारा आहत ६ जीवन-वर्धक गीत ७. आर्त्तनाद ८. अग्निमय गीत ९. साज-सगीत मे मस्त १०. उपाय-सम्बन्धी परिश्रम ११. विनाश के १२. निर्माण १३. अधकार के १४. पर्दे मे १५. प्रकाश, ज्योति १६. आगामी कल का सुख

मेहमान

आज की रात और बाकी है।

कल तो जाना ही है सफर पे मुझे,
ज़िन्दगी मुन्तज़िर है मुंह फाडे।
जिन्दगी, ख़ाको-ख़ून में लिथडी,
आख में शोला-हाए-तुद[1] लिये॥
दो घडी खुद को शादमा[2] कर लें।
आज की रात और बाकी है॥

चलने ही को है इक समूम[3] अभी,
रक्स-फर्मा[4] है रूहे-वर्बादी[5]।
वरवरियत के[6] कारवानो से,
ज़लज़ले में है सीना-ए-गेती[7]॥
ज़ौके पिनहा को[8] कामरा[9] कर लें।
आज की रात और बाकी है॥

एक पैमाना-ए-मये-सरजोश[10],
लुत्फे-गुफ्तार[11], गर्मी-ए-आग़ोश[12]।
वोसे—इस दर्जा आतशी वोसे[13],
फूंक डाले जो मेरी किश्ते-होश[14]॥
रूह यखवस्ता[15] है तपा[16] कर ले।
आज की रात और बाकी है॥

---

१ तेज शोले २ आह्लादित, प्रसन्न ३ विपाक्त वायु ४ नृत्यशील ५ ध्वंस की आत्मा ६ बर्बरता के ७ ससार की छाती ८ निहित आकांक्षा ९ सफल १० तेज शराब का प्याला ११-१२ वार्तालाप का आनन्द, आलिंगन की गर्मी १३ अग्निमय (गरम) चुम्बन १४ चेतना की खेती १५ ठंडी, जमी हुई १६ गरम

एक दो और साग़रे-सरशार[1] ,
फिर तो होना ही है मुझे हुशियार ।
छेड़ना ही है साज़े-ज़ीस्त[2] मुझे,
आग बरसायेंगे लबे-गुफ्तार[3] ॥
कुछ तबीयत तो हम रवा कर ले ।
आज की रात और बाकी है ॥

फिर कहा ये हसी सुहानी रात,
ये फ़रागत[4], ये कैफ़ के[5] लम्हात[6] ।
कुछ तो आसूदगी-ए-ज़ौके-निहाँ[7] ,
कुछ तो तस्कीने-शोरिशे-जज़्बात[8] ॥
आज की रात जाविदाँ[9] कर ले ।
आज की रात, और आज की रात ॥

---

१. लबालब भरा हुआ प्याला २. जीवन-सगीत ३. बात करने वाले होंट ४ अवकाश ५. मादकता ६. क्षण ७. निहित पिपासा की तृप्ति ८. अशात मनोभावो की सन्तुष्टि ९. शाश्वत

शहरे-निगार[1]

रुखसत ऐ हम-सफरो ! शहरे-निगार आ ही गया ।
खुल्द[2] भी जिस पे हो कुर्बां वो दियार[3] आ ही गया ॥

ये जुनूंज़ार[4] मेरा, मेरे गज़ालो का[5] जहा ।
मेरा नज्द आ ही गया, मेरा ततार आ ही गया ॥

गेसुओ वालो मे, अबरू के[6] कमादारो में ।
एक सैद[7] आ ही गया, एक शिकार आ ही गया ॥

बागबानो को बताओ, गुलो-नसरी से[8] कहो ।
इक खराबे-गुलो-नसरीने-बहार आ ही गया ॥

खैर-मकदम को[9] मेरे कोई ब-हगामे-सहर[10],
अपनी आंखो मे लिये शब का खुमार आ ही गया ॥

जुल्फ का[11] अब्रे-सियह[12] बाज़ूए-सीमी पे[13] लिये ।
फिर कोई ज़हमाज़ने-साजे-बहार[14] आ ही गया ॥

हो गई तिश्ना-लबी[15] आज रहीने-कौसर[16],
मेरे लब पर लबे-लअलीने-निगार[17] आ ही गया ॥

१ प्रेयमी का शहर २ स्वर्ग ३ शहर ४ उन्माद-स्थल ५ मृगलोचनी सुन्दरियो का ६ भृकुटी के ७ आखेट ८ फूलो (सेवती) से ६ अभिवादन को १० प्रातःकाल ११ केशो का १२. काला बादल १३ रजत बाहो पर १४ बहार के साज को छेडता हुआ १५ तृष्णा १६ स्वर्ग की अमृत-नदी की कृतज्ञ १७ प्रेयमी के लाल होट

फ़िक्र

नही हरचंद किसी गुमशुदा जन्नत की तलाश,
इक न इक खुल्दे-तरबनाक का[1] अरमां है जरूर।
बज़्मे-दोशीना की[2] हसरत तो नही है मुझ को,
मेरी नजरो मे कोई और शबिस्ता[3] है जरूर ॥

मिटके, बर्बादि-जहा होके, सभी कुछ खोके,
बात क्या है कि ज़ियाँ का[4] कोई एहसास नही।
कारफर्मा[5] है कोई ताज़ा जुनूने-तामीर[6],
दिले-मुज्तर[7] अभी आमाजगहे-यास नही[8] ॥

ताज़ा-दम भी हू मगर फिर ये तकाज़ा क्यो है ?
हाथ रख दे मेरे माथे पे कोई ज़ोहरा-जबी[9]।
एक आगोशे-हसी[10] शौक की[11] मेराज[12] है क्या ?
क्या यही है असरे-नाला-ए-दिल-हाए-हज़ी[13] ॥

मह-वशोका[14] तरब-अगेज[15] तबस्सुम क्या है ?
है तो सब कुछ ये मगर ख्वाब-असर[16] क्यो हो जाये?
हुस्न की जलवागहे-नाज़ का अफसूं[17] तसलीम,
यही कुर्बानिगहे-अर्बाबे-नज़र[18] क्यों हो जाये ?

---

१. आनन्दमय स्वर्ग २. पिछली रात वाली महफिल की ३. शयनागार ४ क्षति का ५ आदेशक ६ निर्माणोन्माद ७ आतुर मन ८. निराशा के चिह्न पर नही पहुँचा ९ सितारे जैसे माथे वाली (अलौकिक सुन्दरी) १० सुन्दर गोद ११. इश्क की १२. पराकाष्ठा १३. शोकाकुल हृदय के आर्तनाद का असर १४. चाँद-ऐसी सुन्दरियो का १५ हर्षोत्पादक १६. सपने का-सा प्रभाव रखने वाला १७ जादू १८ पारखियो का बलि-घर

मैंने सोचा था कि दुश्वार है मंज़िल अपनी,
इक हसी बाज़ुए-सीमीं का[१] सहारा भी तो हो ।
दश्ते-जुल्मात से[२] आखिर को गुज़रना है मुझे,
कोई रख़्शदा-ओ-ताबिंदा[३] सितारा भी तो हो ॥

आग को किसने गुलिस्ताँ न बनाना चाहा,
जल बुझे कितने ख़लील[४] आग गुलिस्ता न बनी ।
टूट जाना दरे-ज़िंदा का[५] तो दुश्वार न था,
खुद जुलेख़ा ही रफ़ीके-महे-कनआँ न बनी ॥

व-ई इनआमे-वफ़ा उफ़ ये तकाज़ाए-हयात[६] ,
ज़िंदगी वक्फ़े-ग़मे-ख़ाक-नशीनाँ[७] कर दे ।
ख़ूने-दिल की कोई क़ीमत जो नहीं है तो न हो,
ख़ूने-दिल नज़्रे-चमनबंदी-ए-दौराँ[८] कर दे ॥

---

१ रजत बाँह २ अंधेरों के जंगल में ३ उज्ज्वल और प्रकाशमान ४ इब्राहीम (पैग़म्बर) ५ कारागार के दरवाज़े का ६ जीवन की माँग ७ मनुष्य-मात्र के दुखों के समर्पण ८ संसार के सुन्दर सुधार के समर्पण

मुझे जाना है इक दिन

मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्मे-नाज़ से आखिर,
अभी फिर दर्द टपकेगा मेरी आवाज से आखिर,
अभी फिर आग उट्ठेगी शिकस्ता[1] साज़ से आखिर,
मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्मे-नाज से आखिर।

अभी तो हुस्न के पैरो पे है जब्रे-हिना-बदी[2],
अभी है इश्क पर आईने-फर्सूदा की[3] पाबंदी,
अभी हावी है अक़्लो-रूह पर झूटी खुदावंदी,
मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्मे-नाज़ से आखिर।

अभी तहज़ीब अद्लो-हक की[4] कश्ती खे नही सकती,
अभी ये ज़िन्दगी दादे-सदाकत[5] दे नही सकती,
अभी इन्सानियत दौलत से टक्कर ले नही सकती,
मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्मे-नाज़ से आखिर।

अभी तो कायनात[6] औहाम का[7] इक कारखाना है,
अभी धोका हकीकत है, हकीक़त इक फसाना है,
अभी तो ज़िन्दगी को ज़िन्दगी करके दिखाना है,
मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्मे-नाज़ से आखिर।

---

१. टूटे हुए २ महदी लगाने पर प्रतिबंध ३. जीर्ण व्यवस्था ४. न्याय और सत्य ५ सत्य को पसन्द करना ६. विश्व ७ भ्रमो का

अभी हैं शहर की तारीक[1] गलिया मुन्तज़िर मेरी,
अभी है इक हसी तहरीके-तूफा[2] मुन्तज़िर मेरी,
अभी शायद है इक ज़जीरे-ज़िदा[3] मुन्तज़िर मेरी,
मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्मे-नाज़ से आखिर।

अभी तो फाकाकश इन्सान से आखें मिलाना है,
अभी झुलसे हुए चेहरो पे अश्के-खूं[4] बहाना है,
अभी पामाले-जौर[5] आदम को[6] सीने से लगाना है,
मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्मे-नाज़ से आखिर।

अभी हर दुश्मने-नज़्मे-कुहन के[7] गीत गाना है,
अभी हर लश्करे-ज़ुल्मत-शिकन के[8] गीत गाना है,
अभी खुद-सर-फरोशाने-वतन के गीत गाना है,
मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्मे-नाज़ से आखिर।

कोई दम मे हयाते-नौ का[9] फिर परचम उठाता हूँ,
बा-ईमाए-हमीयत[10] जान की बाजी लगाता हूँ,
मैं जाऊगा, मैं जाऊगा, मैं जाता हू, मैं जाता हू,
मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्मे-नाज़ से आखिर।

---

१ अधेरी २ तूफान (क्राति) का आदोलन ३ कारागार की ज़जीर ४ खून के आसू ५ अत्याचार-पीडित ६ मनुष्यो को ७ जीर्ण व्यवस्था के शत्रु के ८ अधकार दूर करने वाली सेना के ९ नव-जीवन १० आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए

इश्रते-तनहाई[1]

मैं कि मयख़ाना-ए-उल्फत का[2] पुराना मयख्वार,
महफिले-हुस्न का इक मुतरिबे-शीरी-गुफ्तार[3],
माहपारो का हदफ[4] ज़ोह्रा-जबीनो का शिकार,
नग्मा-पैरा-ओ-नवासजो-गज़लख्वाँ हूँ[5] मैं !

कितने दिलकश मेरे बुतख़ाना-ए-ईमां के सनम[6] ,
वो कलीसाओ के आहू[7] वो गज़ालाने-हरम[8] ,
मैं हमाशौको-मुहब्बत[9] वो हमा-लुत्फो-करम[10],
मरकजे-मरहमते-महफिले-ख़ूबा[11] हूं मैं !

मौजज़न[12] है मये-इश्रत[13] मेरे पैमानो में,
यास का दर्द है कमतर मेरे अफसानो मे,
कामरानी[14] है परअफशा[15] मेरे रूमानो[16] में,
यास की[17] सअ़ी-ए-जुनूखेज पे खदा हूँ[18] मैं !

---

१. एकात का सुख २. प्रेम की मधुशाला का ३. मृदुभाषी गायक ४. चाद के टुकडो (सुन्दरियो) का निशाना ५. गीत गा रहा हूँ ६. मेरी मान्यता के मन्दिर की मूर्तियाँ (सुन्दरिया) ७. गिरजा-घरो के मृग (मृग-नयनी सुन्दरिया) ८ कावे की चार-दीवारी (अत.पुर) की मृगनयनी स्त्रिया ९. प्रेम की मूर्ति १०. कृपा की मूर्ति ११ सुन्दरियो की महफिल की कृपाओं का केन्द्र १२ तरगित १३. सुख-रूपी शराब १४. सफलता १५. पख फैलाए १६. प्रेम-कथाओ मे १७ निराशा की १८. उन्मादोत्पादक प्रयत्न पर हसता हूँ

मेरे अफकार मे[1] महताव की[2] तलअत[3] गलता[4],
मेरी गुफ्तार मे[5] है सुवह की नजहत[6] गलता,
मेरे अशआर मे है फूलो की नकहत[7] गलता,
रूहे-गुलजार[8] हूँ मै जाने-गुलिस्ता हूँ मैं ।

लाख मजबूर हूँ मैं जौके-खुद-आराई से[9],
दिल है वेजार अव इस इशरते-तनहाई से,
आख मजबूर नही है मेरी बीनाई से[10],
महरमे-दर्दो-गमे-आलमे-इन्सा[11] हूँ मैं ।

क्यो न चाहूँ कि हर इक हाथ मे पैमाना हो,
यासो-महरूमी-ओ-मजबूरी इक अफसाना हो,
आम अब फैजे-मय-ओ-साकी-ओ-मयखाना हो,
रिंद हूँ और जिगर-गोशा-ए-रिंदा[12] हूँ मै ।

अब ये अरमा कि वदल जाए जहा का दस्तूर,
एक-इक आख में हो ऐशो-फरागत का[13] सरूर,
एक-इक जिस्म पे हो अतलसो-कमख्वाबो-समूर,
अब ये बात और है खुद चाके-गिरेबा हूँ मैं ।

---

१ रचनाओं मे २ चाद की ३ रूप ४ डूवी (घुली) हुई ५ वातचीत मे ६ पवित्रता ७ सुगध ८ वाग की आत्मा ९ आत्म-मज्जा की प्रवृत्ति से १० ज्योति से ११ मनुष्य के दुख-दर्द का मर्मज्ञ १२ मद्यपो के हृदय का टुकडा १३ ऐश्वर्य एव सुख का

नौजवान ख़ातून से

हिजाबे-फित्ना-परवर[1] अब उठा लेती तो अच्छा था,
खुद अपने हुस्न को पर्दा बना लेती तो अच्छा था।
तेरी नीची नजर खुद् तेरी इस्मत की मुहाफिज है,
तू इस नश्तर की तेज़ी आज़मा लेती तो अच्छा था।
तेरी चीने-जबी[2] खुद इक सजा क़ानूने-फितरत में,
इसी शमशीर से कारे-सज़ा[3] लेती तो अच्छा था।
ये तेरा जर्द रुख[4], ये खुश्क लब, ये वहम, ये वहशत,
तू अपने सर से ये बादल हटा लेती तो अच्छा था।
दिले-मजरूह को[5] मजरूहतर करने से क्या हासिल ?
तू आंसू पोंछ कर अब मुस्करा लेती तो अच्छा था।
अगर खलवत मे[6] तू ने सर उठाया भी तो क्या हासिल ?
भरी महफिल मे आकर सर झुका लेती तो अच्छा था।
तेरे माथे का टीका मर्द की किस्मत का तारा है,
अगर तू साज़े-बेदारी[7] उठा लेती तो अच्छा था।
सिनाने[8] खैंच ली हैं सर-फिरे बागी जवानो ने,
तू सामाने-जराहत[9] अब उठा लेती तो अच्छा था।
तेरे माथे पे ये आचल बहुत ही खूब है लेकिन,
तू इस आंचल से इक परचम[10] बना लेती तो अच्छा था।

---

१ उपद्रवकर्ता पर्दा २. माथे का बल ३ दण्ड देने का कार्य ४. पीला मुखडा ५. घायल हृदय को ६ एकात मे ७. जागरण का साज ८ भाले ९. शल्य चिकित्सा-सम्बधी सामग्री १०. पताका

नन्ही पुजारन

इक नन्ही-मुन्नी सी पुजारन ।
पतली बाहे, पतली गरदन ॥

भोर भये मन्दिर आई है ।
आई नही है मा लाई है ॥

वक्त से पहले जाग उठी है ।
नीद अभी आखो में भरी है ॥

ठोडी तक लट आई हुई है ।
यू ही सी लहराई हुई है ॥

आखो मे तारो की चमक है ।
मुखडे पर चादी की झलक है ॥

कैसी सुन्दर है क्या कहिये !
नन्ही सी इक सीता कहिये ॥

धूप चढे तारा चमका है ।
पत्थर पर इक फूल खिला है ॥

चाद का टुकडा, फूल की डाली ।
कमसिन, सीधी, भोली-भाली ॥

कान मे चादी की बाली है ।
हाथ मे पीतल की थाली है ॥

दिल में लेकिन ध्यान नही है ।
पूजा का कुछ ज्ञान नही है ॥

कैसी भोली और सीधी है ।
मन्दिर की छत देख रही है ॥
मा बढ़कर चुटकी लेती है ।
चुपके-चुपके हंस देती है ॥
हसना रोना उसका मजहब ।
उसको पूजा से क्या मतलब ॥
ख़ुद तो आई है मन्दिर मे ।
मन उसका है गुड़िया-घर मे ॥

दिल्ली से वापसी

रुख्सत ऐ दिल्ली तेरी महफिल से अब जाता हू मैं।
नौहागर[1] जाता हू मैं, नाला-ब-लब[2] जाता हू मैं ॥

याद आएगे मुझे तेरे ज़मीनो-आस्मा।
रह चुके है मेरी जौलांगाह[3] तेरे बोस्ता[4] ॥

तेरा दिल धडका चुके हैं मेरे एहसासात भी।
तेरे एवानो मे[5] गूंजे हैं मेरे नग्मात भी ॥

रश्के-शीराज़े-कुहन[6], हिन्दोस्ता की आबरू।
सरज़मीने-हुस्नो-मौसीकी[7], बहिश्ते-रगो-बू[8] ॥

माबदे - हुस्नो - मुहब्बत[9] बारगाहे-सोज़ो-साज़[10]।
तेरे बुतख़ाने हसी, तेरे कलीसा दिलनवाज़ ॥

ज़िक्र यूसुफ का तो क्या कीजे तेरी सरकार मे।
ख़ुद जुलेखा आके बिकती है तेरे दरबार मे ॥

जन्नतें आबाद हैं तेरे दरो-दीवार मे।
और तू आबाद ख़ुद शायर के कल्बे-ज़ार[11] मे ॥

महफिले-साकी सलामत ! बज्मे-अजुम[12] बरकरार।
नाज़नीनाने-हरम पर[13] रहमते-पर्वरदिगार[14] ॥

---

१ विलाप करते हुए २ होटो पर आर्तनाद लिये हुए ३ दौड का मैदान (क्रीडा-स्थल) ४ उपवन ५ महलो मे ६ प्राचीन फ़ारस देश की ईर्ष्या ७ सौन्दर्य तथा सगीत की धरती ८ रग तथा सुगधि का स्वर्ग ९ सौन्दर्य तथा प्रेम का आराधना-गृह १० सोज़ और साज़ की राजसभा ११ क्षीण हृदय १२ सितारो (सुन्दरियो) की १३ अन्त पुर की सुन्दरियो पर १४ भगवान की कृपा

याद आयेगी मुझे बेतरह याद आयेगी तू।
ऐन वक़्ते-मैकशी[1] आखों मे फिर जायेगी तू॥
क्या कहू किस शौक से आया था तेरी बज्म मे।
छोड़ कर खुल्दे-अलीगढ की[2] हजारो महफिलें।
कितने रंगी अहदो-पैमा[3] तोड़कर आया था मैं।
दिल-नवाजाने-चमन को छोड़कर आया था मैं॥
इक नशेमन मैंने छोड़ा, इक नशेमन छुट गया।
साज़ बस छेडा ही था मैंने कि गुलशन छुट गया॥
दिल में सोज़े-गम की इक दुनिया लिये जाता हूँ मैं।
आह तेरे मैकदे से बे पिये जाता हू मैं॥
जाते-जाते लेकिन इक पैमां किये जाता हूं मैं।
अपने अज्मे-सरफरोशी को[4] कसम खाता हूं॥
फिर तेरी बज्मे-हसी मे लौटकर आऊँगा मैं।
आऊँगा मैं और बान्दाज़े-दिगर[5] आऊँगा मैं॥
आह वो चक्कर दिये है गर्दिशे-अय्याम ने[6]।
खोल कर रख दी हैं आखें तल्खी-ए-आलाम ने[7]॥
फित्रते-दिल दुश्मने-नग्मा हुई जाती है अब।
जिन्दगी इक बर्क[8] इक शोला हुई जाती है अब॥
सर से पा तक[9] एक खूनीं राग बनकर आऊँगा।
लालाजारे-रगो-बू मे[10] आग बनकर आऊँगा॥

---

१ शराब पीते समय २ अलीगढ का स्वर्ग ३. रंगीन वचन ४. जान पर खेल जाने के संकल्प की ५. अन्य ढग से ६. काल-चक्र ने ७. दुखो की कटुता ने ८ बिजली ९. सिर से पैर तक १० रंग और सुगंधि के उपवन मे

एतराफ़

अब मेरे पास तुम आई हो तो क्या आई हो !

मैंने माना कि तुम इक पैकरे-रअनाई[1] हो,
चमने - दहर में[2] रूहे - चमन - आराई[3] हो।
तलअते-मेहर[4] हो, फिर्दौस की[5] बरनाई[6] हो,
बिनते महताब[7] हो गर्दू से[8] उतर आई हो।
मुझसे मिलने मे अब अदेशा-ए-रुसवाई है।
मैंने खुद अपने किये की ये सजा पाई है॥

खाक मे आह मिलाई है जवानी मैंने,
शोलाजारो मे जलाई है जवानी मैंने।
शहरे-खूबा मे[9] गवाई है जवानी मैंने,
ख्वाबगाहो मे जगाई है जवानी मैंने॥
हुस्न ने जब भी इनायत की नजर डाली है।
मेरे पैमाने-मुहब्बत ने[10] सिपर[11] डाली है॥

उन दिनो मुझ पे कयामत का जुनू तारी था,
सर पे सरशारी-ए-इश्रत का[12] जुनू तारी था,
माहपारो से[13] मुहब्बत का जुनू तारी था।
शहरयारो से रकाबत का जुनू तारी था।
बिस्तरे-मखमलो-सजाब थी दुनिया मेरी।
एक रगीनो-हसी ख्वाब थी दुनिया मेरी॥

---

१ सुन्दरता की मूर्ति २ ससार रूपी वाटिका मे ३ वाटिका को सजाने वाली आत्मा ४ सूर्य की चमक ५ स्वर्ग की ६ जवानी ७ चाँद की बेटी ८ आकाश से ९ सुन्दरियो के नगर मे १० प्रेम-प्रतिज्ञा ११ ढाल (हथियार) १२ सुख-भोग का १३ चाँद के टुकडो (सुन्दरियो से)

जन्नते-शौक[1] थी बेगाना-ए-आफाते-समूम[2],
दर्द जब दर्द न हो, काविशे-दरमां[3] मालूम।
खाक थे दीदा-ए-बेबाक मे[4] गर्दू के नजूम[5],
बज़्मे-परवीं[6] थी निगाहों में कनीज़ों का हुजूम।
लैला-ए-नाज़-बर-अफ़गंदा नक़ाब[7] आती है।
अपनी आखों में लिये दावते-ख्वाब आती है॥

सग को[8] गौहरे-नायाबो-गिरां[9] जाना था,
दश्ते-पुरखार को[10] फ़िर्दौसे-जवां[11] जाना था।
रेग को[12] सिलसिला-ए-आबे-रवां[13] जाना था,
आह ये राज़ अभी मैंने कहा जाना था?
मेरी हर फ़तह में है एक हज़ीमत[14] पिनहां[15]।
हर मुसर्रत में है राज़े-गमो-हसरत पिनहां॥

क्या सुनोगी मेरी मजरूह जवानी की पुकार,
मेरी फ़र्यादे-जिगरदोज़[16] मेरा नाला-ए-ज़ार[17]।
शिद्दते-कर्ब मे[18] डूबी हुई मेरी गुफ़्तार[19],
मैं कि खुद अपने मज़ाके-तरब-आगी का[20] शिकार॥

---

१ प्रेम का स्वर्ग २. विषाक्त वायु की विपत्तियो से अपरिचित ३. उपचार का प्रयत्न ४ निडर आंखो मे ५. आकाश के नक्षत्र ६ सितारो ऐसी सुन्दर सुकुमारियो की सभा ७. चेहरे पर नक़ाब डाले हुए रात ८ पत्थर को ९ अलभ्य तथा अमूल्य मोती १०. कांटों भरे जगलों को ११. जवान स्वर्ग १२ रेत को १३. बहते जल का सिलसिला १४ पराजय १५ निहित १६ दिल तोडने वाली फरियाद १७ दुखभरा आर्त्तनाद १८. उत्कट पीड़ा में १९.
२०. प्रसन्न-हृदयता

वो गुदाज़े - दिले - मरहूम[1] कहां से लाऊ ?
अब मैं वो जज्बा-ए-मासूम[2] कहा से लाऊ ?
मेरे साए से डरो, तुम मेरी कुरबत से[3] डरो,
अपनी जुरंत की कसम अब मेरी जुरंत से डरो।
तुम लताफत[4] हो अगर मेरी लताफत से डरो,
मेरे वादो से डरो, मेरी मुहब्बत से डरो।
अब मै अल्ताफो-इनायत का[5] सजावार नही।
मैं वफादार नही, हा मैं वफादार नही ॥

अब मेरे पास तुम आई हो तो क्या आई हो !

---

१ मृत-हृदय की मृदुलता २ सरल भाव ३ सामीप्य ४. माधुर्य
५ कृपाओ का

ग़ज़लें

कुछ तुझको खबर है हम क्या-क्या, ऐ शोरिशे-दौरा[1] भूल गये।
वो ज़ुल्फे-परेशाँ[2] भूल गये, वो दीदा-ए-गिरयाँ[3] भूल गये॥
ऐ शौके-नज्जारा[4] क्या कहिये, नज़रों मे कोई सूरत ही नही।
ऐ जौके-तसव्वुर[5] क्या कीजे, हम सूरते-जाना भूल गये॥
अब गुल से नज़र मिलती ही नही, अब दिल की कली खिलती ही नही।
ऐ फस्ले-बहारा[6] रुखसत हो, हम लुत्फे-बहारा भूल गये॥
सब का तो मुदावा[7] कर डाला, अपना ही मुदावा कर न सके।
सब के तो गिरेबा सी डाले, अपना ही गिरेबा भूल गये॥
ये अपनी वफा का आलम है, अब उनकी जफा को क्या कहिये ?
इक नश्तरे-ज़हर-आगीं[8] रखकर नजदीके-रगे-जा[9] भूल गये॥

० ०

कमाले-इश्क़[10] है दीवाना हो गया हूं मैं।
ये किसके हाथ से दामन छुडा रहा हूं मै ?
तुम्ही तो हो जिसे कहती है नाखुदा[11] दुनिया।
बचा सको तो बचा लो कि डूबता हूँ मै॥
ये मेरे इश्क की मजबूरिया मआज़-अल्लाह[12]।
तुम्हारा राज तुम्ही से छुपा रहा हू मैं॥

---

१ ससार के उपद्रव २. बिखरे केश ३. रोती आख ४. देखने की चाह ५. कल्पना की प्रवृत्ति ६ वसन्त ऋतु ७ उपचार ८. विष मे बुझा हुआ नश्तर ९ जान की रग के निकट १०. इश्क का चमत्कार ११. कर्णधार १२ खुदा की पनाह

इस इक हिजाब पे[1] सौ बेहिजाबिया सदके ।
जहा से चाहता हू तुम को देखता हू मै ॥
बताने वाले वही पर बताते हैं मज़िल ।
हज़ार बार जहा से गुज़र चुका हूँ मै ॥
कभी ये ज़ोम[2] कि तू मुझ से छुप नही सकता ।
कभी ये वहम कि खुद भी छुपा हुआ हूँ मै ॥
मुझे सुने न कोई मस्ते-बादा-ए-इश्रत[3] ।
'मजाज़' टूटे हुए दिल की इक सदा हू मै ॥

सारा आलम गोश-बर-आवाज़[4] है ।
आज किन हाथो मे दिल का साज़ है ?
हा ज़रा जुर्रत दिखा ऐ जज्बे-दिल ।
हुस्न को पर्दे पे अपने नाज़ है ॥
हमनशी दिल की हकीकत क्या कहू ?
सोज मे डूबा हुआ इक साज़ है ॥
आपकी मख्मूर आँखो की कसम ।
मेरी मै-ख्वारी अभी तक राज़ है ॥
हस दिये वो मेरे रोने पर मगर ।
उनके हस देने मे भी इक राज़ है ॥

---

१ पर्दे पर २ घमड ३ सुख रूपी शराब द्वारा मस्त ४ आवाज पर कान लगाये हुए

छुप गये वो साज़े-हस्ती[1] छेड़ कर।
अब तो बस आवाज़ ही आवाज़ है॥
हुस्न को नाहक़ पशेमाँ कर दिया।
ऐ जुनूं ये भी कोई अंदाज़ है॥
सारी महफिल जिस पे झूम उट्ठी 'मजाज़'।
वो तो आवाज़े-शिकस्ते-साज़[2] है॥

वो नकाब आपसे उठ जाए तो कुछ दूर नही।
वरना मेरी निगहे-शौक[3] भी मजबूर नही॥
खातिरे-अहले-नज़र[4] हुस्न को मन्जूर नही।
इसमे कुछ तेरी खता दीदा-ए-महजूर[5] नही॥
लाख छुपते हो मगर छुपके भी मस्तूर[6] नहीं।
तुम अजब चीज़ हो, नज़दीक नही दूर नही॥
जुर्रते-अर्ज़ पे[7] वो कुछ नही कहते लेकिन।
हर अदा से ये टपकता है कि मन्जूर नही॥
दिल धडक उठता है खुद अपनी ही हर आहट पर।
अब कदम मञ्ज़िले-जानां से बहुत दूर नही॥
हाए वो वक्त कि जब बे-पिये मदहोशी थी।
हाए ये वक़्त कि अब पी के भी मख्मूर नही॥

---

१ जीवन-सगीत २. साज के टूटने की आवाज ३. इश्क (देखने) की निगाह ४ पारखी जनो का पक्षपात ५. वियोगग्रस्त आख ६. छुपे हुए ७. निवेदन के साहस पर

हुस्न ही हुस्न है जिस सिम्त उठाता हूँ नज़र।
अब यहा तूर नही, वर्क[1] सरे-तूर[2] नही॥

देख सकता हूँ जो आँखो से वो काफी है 'मजाज'।
अहले-इर्फां की[3] नवाजिश मुझे मन्जूर नही॥

निगाहे-लुत्फ[4] मत उठ खूगरे-आलाम[5] रहने दे।
हमे नाकाम रहना है, हमे नाकाम रहने दे॥

किसी मासूम पर वेदाद का[6] इल्जाम क्या मानी ?
ये वहशतखेज़ वातें इश्के-वद-अजाम[7] रहने दे॥

अभी रहने दे दिल मे शौके-शोरीदा के[8] हगामे।
अभी सर में मुहब्बत का जुनूने-खाम रहने दे॥

अभी रहने दे कुछ दिन लुत्फे-नग्मा, मस्ती-ए-सहबा।
अभी ये साज़ रहने दे, अभी ये जाम रहने दे॥

कहाँ तक हुस्न भी आखिर करे पासे-रवादारी[9]।
अगर ये इश्क खुद ही फर्के-खासो-आम[10] रहने दे॥

ब-ईं-रिंदी[11] 'मजाज़' इक शायरे-मज़दूरो-दहकाँ है।
अगर शहरो में वो वदनाम है वदनाम रहने दे॥

---

१ बिजली २ तूर की चोटी पर ३ ब्रह्मज्ञानियो की ४ कृपा-दृष्टि ५ दुखो का अभ्यस्त ६ अन्याय, अत्याचार ७ अमगल-परिणाम ८ परेशानियो की इच्छा के ९ रवादारी का लिहाज़ १० विशेष और साधारण का भेद ११ इस स्वच्छदता पर भी

सीने मे उनके जलवे छुपाये हुए तो है।
हम अपने दिल को तूर वनाये हुए तो है ॥
तासीरे-जज्वे-शौक[1] दिखाये हुए तो हैं।
हम तेरा हर हिजाव[2] उठाये हुए तो है ॥
हा क्या हुआ वो हौसला-ए-दीद[3] अहले-दिल।
देखो ना वो नक़ाव उठाये हुए तो हैं ॥
तेरे गुनाहगार, गुनाहगार ही सही।
तेरे करम की आस लगाये हुए तो है ॥
अल्ला री कामियावी-ए-आवारगाने-इश्क[4]।
खुद गुम हुए तो क्या, उसे पाये हुए तो है ॥
यूँ तुझको अख्तियार है तासीर[5] दे न दे।
दस्ते-दुआ[6] हम आज उठाये हुए तो हैं ॥
मिटते हुओ को देख के क्यो रो न दें 'मजाज'।
आखिर किसी के हम भी मिटाये हुए तो हैं ॥

◇ ◇ ◇

खुद दिल मे रहके आख से पर्दा करे कोई।
हा लुत्फ जब है पा के भी ढूडा करे कोई ॥
तुमने तो हुक्मे-तर्के-तमन्ना[7] सुना दिया।
किस दिल से आह तर्के-तमन्ना करे कोई ॥
दुनिया लरज़ गई दिले-हिर्मां-नसीव की[8]।
इस तरह साज़े-ऐश न छेडा करे कोई ॥

१. इश्क़ के आकर्षण का गुण, प्रभाव २ पर्दा ३. देखने का साहस ४. इश्क के आवारो की सफलता ५. फल ६. प्रार्थना के (लिए) हाथ ७ इश्क़ तज देने का हुक्म ८. निराश मन की

क्या-क्या हुआ है हम से जुनूं मे न पूछिये ।
उल्झे कभी ज़मी से कभी आस्मा से हम ।।

ठुकरा दिये हैं अक्लो-खिरद के[1] सनमकदे[2] ।
घबरा चुके थे कश्मकशे-इम्तहा से हम ।।

बख़्शी हैं हमको इश्क ने वो जुर्रतें 'मजाज़' !
डरते नही सियासते-अहले-जहा से हम ।।

◇ ◇ ◇

साज़गार है हमदम इन दिनो जहा अपना ।
इश्क शादमा अपना, शौक कामरा अपना ।।

आह बेअसर किसकी, नाला[3] नारसा[4] किसका ।
काम बारहा आया जज्बा-ए-निहा[5] अपना ।।

कब किया था इस दिल पर हुस्न ने करम इतना ।
मेहरबान इस दर्जा कब था आस्मा अपना ।।

उलझनो से घबराए, मैकदे मे दर आए[6] ।
किस कदर तन-आसा है ज़ौके-रायगा अपना ।।

इश्क और रुसवाई कौन-सी नई शै है ।
इश्क तो अज़ल से था रुसवाए-जहा अपना ।।

तुम 'मजाज़' दीवाने मसलहत से बेगाने ।
वर्ना हम बना लेते तुमको राज़दा अपना ।।

---

१ बुद्धि २ मन्दिर ३ आर्तनाद ४ न पहुँचने वाला ५ निहित भाव ६ आ गये

शौक के हाथों ऐ दिले-मुज़तर क्या होना है क्या होगा ?
इश्क तो रुसवा हो ही चुका है, हुस्न भी क्या रुसवा होगा ?
हुस्न की बज्मे-खास मे जाकर इससे ज़यादा क्या होगा ?
कोई नया पैमा[1] वांधेगे, कोई नया वाअ़दा होगा ॥
चारागरी[2] सर आखों पर इस चारागरी से क्या होगा ?
दर्द कि अपनी आप दवा है, तुम से अच्छा क्या होगा ?
वाइजे - सादालोह् से कह दो छोड़े उक़्बा की[3] बातें ।
इस दुनिया में क्या रक्खा है, उस दुनिया मे क्या होगा ।
तुम भी 'मजाज़' इन्सान हो आखिर लाख छुपाओ इश्क अपना ।
ये भेद मगर खुल जायेगा, ये राज मगर अफशा होगा ॥

नही ये फिक्र कोई रहवरे - कामिल[4] नही मिलता ।
कोई दुनिया में मानूसे - मिज़ाजे - दिल[5] नही मिलता ॥
कभी साहिल पे रहकर शौक़, तूफानो से टकरायें ।
कभी तूफां मे रहकर फ़िक्र है साहिल नही मिलता ॥
ये आना कोई आना है कि बस रस्मन चले आये ।
ये मिलना खाक मिलना है कि दिल से दिल नही मिलता ॥
शिकस्ता-पा को[6] मुज़दा[7], खस्तगाने-राह को[8] मुज़दा ।
कि रहवर को सुराग़े - जादहे - मज़िल[9] नही मिलता ॥

---

१. प्रतिज्ञा २. उपचार ३. परलोक की ४. सिद्ध पथ-प्रदर्शक ५. मन-पसन्द परिचित (मित्र) ६ शिथिल जनो को ७. मगल समाचार ८ रास्ते के थके हुओ को ९ मंज़िल के मार्ग का पता

वहां कितनो को तख्तो-ताज का अरमा है क्या कहिये।
जहा साइल को[1] अक्सर कासा-ए साइल[2] नही मिलता ॥
ये कत्ले-आम और वे इज़्ने - कत्ले - आम[3] क्या कहिये।
ये बिस्मिल[4] कैसे बिस्मिल हैं जिन्हे कातिल नही मिलता ॥

जुनूने-शौक[5] अब भी कम नही है।
मगर वो आज भी वरहम नही है ॥
बहुत मुश्किल है दुनिया का सवरना।
तेरी जुल्फो का पेचो-खम नही है ॥
बहुत कुछ और भी है इस जहां मे।
ये दुनिया महज़ गम ही गम नही है ॥
तकाज़े क्यो करूं पैहम[6] न साकी।
किसे या फिक्रे-बेशो-कम[7] नही है ॥
उधर मश्कूक[8] है मेरी सदाकत।
इधर भी बदगुमानी कम नही है ॥
मेरी बर्बादियो का हम - नशीनो ।
तुम्हे क्या खुद मुझे भी गम नही है ॥
अभी बज़्मे-तरब से[9] क्या उठू मैं।
अभी तो आंख भी पुरनम[10] नही है ॥

---

१ भिखारी २. भिक्षा-पात्र ३ बिना आज्ञा सर्व-सहार ४ घायल ५. इश्क का उन्माद ६ निरन्तर ७ अधिक और कम की चिन्ता ८ सदिग्ध ६ खुशी की महफिल १० सजल

व-ईं सैले - गमो - सैले - हवादस[1] ।
मेरा सर है कि अब भी खम नही है ॥
'मजाज' इक बादाकश[2] तो है यकीनन ।
जो हम सुनते थे वो आलम[3] नही है ॥

जिगर और दिल को बचाना भी है ।
नजर आप ही से मिलाना भी है ॥
मुहब्बत का हर भेद पाना भी है ।
मगर अपना दामन बचाना भी है ॥
जो दिल तेरे गम का निशाना भी है ।
कतीले - ज़फाए - जमाना[4] भी है ॥
खिरद की[5] इताअ़त[6] जरूरी सही ।
यही तो जुनूं का ज़माना भी है ॥
ये दुनिया, ये उक़बा कहां जाइये ?
कही अहले-दिल का ठिकाना भी है ॥
मुझे आज साहिल पे रोने भी दो ।
कि तूफान मे मुस्कराना भी है ॥
ज़माने से आगे तो बढिये 'मजाज' !
जमाने को आगे बढाना भी है ॥

---

१. चिन्ताओ तथा दुर्घटनाओ के बावजूद २. शराबी ३. हालत
४. ससार के अत्याचारो का मारा हुआ ५. बुद्धि की ६. आराधना

दामने-दिल पे[1] नही वारिशे-इल्हाम[2] अभी ।
इश्क नापुख्ता अभो, जज्बे-दरू[3] खाम[4] अभो ॥
खुद झिझकता हूँ कि दावा-ए-जुनूं[5] क्या कीजे ।
कुछ गवारा भी है ये कैदे-दरो-बाम[6] अभो ॥
ये जवानी तो अभी माइले-पैकार[7] नही ।
ये जवानी तो है रुसवाए-मै-ओ-जाम अभी ॥
वाइजो-शैख ने[8] सर जोड के वदनाम किया ।
वरना वदनाम न होती मये-गुलफाम[9] अभी ॥
मैं ब-सद-फख्र[10] ये जुह्हाद से[11] कहता हू 'मजाज' ।
मुझको हासिल शरफे-वैअते-खय्याम[12] अभी ॥

आशिकी जाफजा भी होती है ।
और सब्र-आजमा भी होती है ॥
रूह होती है कैफ-परवर[13] भी ।
और दर्द-आशना भी होती है ॥
हुस्न को कर न दे ये शरमिन्दा ।
इश्क से ये खता भी होती है ॥

---

१ दिल के दामन पर २ दैवी प्रेरणा की वर्षा ३ भीतरी भावना ४ अपक्व ५ उन्माद का दावा ६ दरवाजो और छतो (घर की) कैद ७ सघर्ष की ओर प्रवृत्त ८ धर्मोपदेशको ने ९ फूलो ऐसी सुन्दर शराव १० अत्यन्त गौरव के साथ ११ सयमियो से १२ खय्याम की शिष्यता की प्रतिष्ठा १३ उन्मादोत्पादक

बन गई रस्म वादाख्वारी भी ।
ये नमाज अब कज़ा भी होती है ॥

जिसको कहते है नाला-ए-बरहम ।
साज़ मे वो सदा भी होती है ॥

◇ ◇ ◇

रहे-शौक़ से[1] अब हटा चाहता हूं ।
कशिश[2] हुस्न की देखना चाहता हू ॥

कोई दिल-सा दर्द-आशना चाहता हूं ।
रहे-इश्क मे रहनुमा चाहता हूं ॥

तुझी से तुझे छीनना चाहता हू ।
ये क्या चाहता हू, ये क्या चाहता हूं !

खताओ पे जो मुझको माइल करे फिर ।
सज़ा और ऐसी सज़ा चाहता हू ॥

तुझे ढूंडता हू तेरी जुस्तजू है ।
मज़ा है कि खुद गुम हुआ चाहता हूं ॥

◇ ◇ ◇

अक़्ल की सतह से कुछ और उभर जाना था ।
इश्क को मज़िले-पस्ती से गुज़र जाना था ॥

जल्वे थे हल्क़ा-ए-हर-दामे-नज़र से[3] बाहिर ।
मैंने हर जलवे को पाबंदे-नज़र[4] जाना था ॥

---

१ इश्क के मार्ग से २ आकर्षण ३ नज़र के जाल की हर कडी से
४. नजर का पाबन्द

हुस्न का गम भी हसी, फिक्र हसी, दर्द हसी।
उनको हर रग मे हर तौर सवर जाना था॥

हुस्न ने शौक के हगामे तो देखे थे वहुत।
इश्क के दावा-ए-तकदीस से[1] डर जाना था॥

ये तो क्या कहिये चला था मै कहा से हमदम।
मुझ को ये भी न था मालूम किधर जाना था॥

हुस्न, और इश्क को दे ताना-ए-वेदाद[2] 'मजाज'।
तुमको तो सिर्फ इसी वात पे मर जाना था॥

परतौ-ए-सागरे-सहवा[3] क्या था ?
रात इक हश्र-सा बर्पा क्या था ?

क्यो जवानी की मुझे याद आई ?
मैने इक ख्वाब सा देखा था॥

हुस्न की आख भी नमनाक हुई,
इश्क को आपने समझा क्या था ?

इश्क ने आख झुका ली वर्ना,
हुस्न और हुस्न का पर्दा क्या था ?

क्यो 'मजाज' आपने सागर तोडा ?
आज ये शहर में चर्चा क्या था ?

---

१ पविश्रा के दावे से २ अत्याचार का ताना ३ अगूरी शराव का प्रतिबिव

ये जहां वारगहे-रत्ले-गिरां[1] है साकी।
और इक जहन्नुम मेरे सीने में तपां[2] है साकी ॥
जिसने बर्बाद किया माइले-फरियाद किया।
वो मुहब्बत अभी इस दिल मे जवां है साकी ॥
एक दिन आदमो-हव्वा भी किये थे पैदा।
वो उखुव्वत[3] तेरी महफिल मे कहां है साकी ॥
माहो-अंजुम[4] मेरे अश्को से गुहरताव[5] हुए।
कहकशा नूर की एक जूए-रवां[6] है साकी ॥
हुस्न ही हुस्न है जिस सिम्त भी उठती है नज़र।
कितना पुरकैफ ये मजर, ये समां है साकी ॥
ज़मज़मा[7] साज़ का पायल के छनाके की तरह।
वेहतर-अज शोरिशे-नाकूसो-अजां[8] है साकी ॥
मेरे हर लफ्ज मे वेताब मेरा सोज़े-दरूं[9]।
मेरी हर सास मुहब्वत का धुआं है साकी ॥

---

१ वहुमूल्य शराव के प्याले की राजसभा (मधुशाला) २ जल रहा है ३. वन्धुत्व ४ चाद, सितारे ५. मोतियो ऐसे चमकदार ६. वहती नदी ७ सगीत ८. शख और अजान के शोर से वेहतर ९. भीतरी जलन

तस्कीने-दिले-महज़ूं न हुई[1] वो सई-ए-करम[2] फर्मा भी गये।
इस सई-ए-करम को क्या कहिये बहला भी गये तड़पा भी गये॥

हम अर्ज़े-वफा भी कर न सके, कुछ कह न सके, कुछ सुन न सके।
या हमने ज़बां ही खोली थी, वां आंख झुकी शर्मा भी गये॥

आशुफ्तगी-ए-वहशत की[3] कसम, हैरत की कसम, हसरत की कसम।
अब आप कहें कुछ या न कहें हम राज़े-तबस्सुम पा भी गये॥

रूदादे-गमे-उल्फत[4] उनसे हम क्या कहते, क्योंकर कहते?
इक हर्फ न निकला होंटों से और आंख में आंसू आ भी गये॥

अरबाबे-जुनूं पर[5] फुरकत में अब क्या कहिये क्या-क्या गुज़री।
आए थे सवादे-उल्फत में[6] कुछ खो भी गये कुछ पा भी गये॥

ये रंगे-बहारे-आलम है, क्यों फिक्र है तुझको ऐ साकी।
महफिल तो तेरी सूनी न हुई, कुछ उठ भी गये कुछ आ भी गये॥

उस महफिले-कैफो-मस्ती में, उस अंजुमने-इर्फानी में[7]।
सब जाम-ब-कफ[8] बैठे ही रहे, हम पी भी गये छलका भी गये॥

१ दुःखित हृदय शान्त न हुआ २ कृपा करने की कोशिश ३ उपेक्षा की खिन्नता की ४ प्रेम के दुखों की कहानी ५ उन्माद-ग्रस्तों (आशिकों) पर ६ प्रेम-नगरी की सीमा में ७ ब्रह्मज्ञानियों की सभा में ८ प्याला हाथ में लिये

फुटकर

खुद को वहलाता था आखिर खुद को वहलाता रहा ।
मैं ब-ईं सोज़े-दरूं[1] हंसता रहा गाता रहा ।।
मुझ को एहसासे-फरेबे-रंगो-बू[2] होता रहा ।
मैं मगर फिर भी फरेबे-रंगो-बू खाता रहा ।।

◇ ◇ ◆

मेरी दुनिया-ए-वफा मे क्या से क्या होने लगा ।
इक दरीचा बंद मुझ पर एक वा होने[3] लगा ।।
इक निगारे-नाज़ की फिरने लगीं आँखें 'मजाज़' ।
इक बुते-काफिर का दिल दर्द-आशना होने लगा ।।

◇ ◇ ◆

खाइयेगा इक निगाहे-लुत्फ का कब तक फरेब ?
कोई अफसाना बना कर बदगुमा हो जाइये ।।

◇ ◇ ◇

मये-गुलफाम[4] भी है, साज़े-इशरत[5] भी है, साकी भी ।
मगर मुश्किल है आशोबे-हकीकत से[6] गुज़र जाना ।।

◇ ◇ ◇

मैं कि बर्बादे-निगाराने-दिलआरा[7] ही सही,
मैं कि रुसवाए-मयो-सागरो-मीना[8] ही सही ।

---

१ हृदय की जलन के बावजूद २. रंग तथा सुगंध के छल का अनुभव ३. खुलने ४ फूल जैसी सुन्दर शराब ५. सुख-संगीत ६. वास्तविकता की चुभन (पीडा) से ७ हृदयाकर्षक सुन्दरियो द्वारा बर्बाद ८ शराब के प्याले और सुराही के द्वारा अपमानित

तस्कीने-दिले-महज़ू न हुई[1] वो सई-ए-करम[2] फर्मा भी गये।
इस सई-ए-करम को क्या कहिये वहला भी गये तडपा भी गये।।

हम अर्ज़े-वफा भी कर न सके, कुछ कह न सके, कुछ सुन न सके।
या हमने ज़बा ही खोली थी, वा आख झुकी शर्मा भी गये।।

आशुफ्तगी-ए-वहशत की[3] कसम, हैरत की कसम, हसरत की कसम।
अब आप कहे कुछ या न कहे हम राज़े-तवस्सुम पा भी गये।।

रूदादे-गमे-उल्फत[4] उनसे हम क्या कहते, क्योकर कहते?
इक हर्फ न निकला होटो से और आख मे आसू आ भी गये।।

अरबाबे-जुनू पर[5] फुरकत में अब क्या कहिये क्या-क्या गुज़री।
आए थे सवादे-उल्फ़त मे[6] कुछ खो भी गये कुछ पा भी गये।।

ये रगे-वहारे-आलम है, क्यो फिक्र है तुझको ऐ साकी।
महफिल तो तेरी सूनी न हुई, कुछ उठ भी गये कुछ आ भी गये।।

उस महफिले-कैफो-मस्ती मे, उस अंजुमने-इर्फानी मे[7]।
सब जाम-ब-कफ[8] बैठे ही रहे, हम पी भी गये छलका भी गये।।

---

१ दुखित हृदय शान्त न हुआ २ कृपा करने की कोशिश ३ उपेक्षा की खिन्नता की ४ प्रेम के दुखो की कहानी ५ उन्माद-ग्रस्तो (आशिको) पर ६ प्रेम-नगरी की सीमा मे ७ ब्रह्मज्ञानियो की सभा मे ८ प्याला हाथ मे लिये

फुटकर

खुद को बहलाना था आखिर खुद को बहलाता रहा।
मैं ब-ईं सोजे-दरूं[1] हसता रहा गाता रहा॥
मुझ को एहसासे-फरेबे-रंगो-बू[2] होता रहा।
मैं मगर फिर भी फरेबे-रंगो-बू खाता रहा॥

◇ ◇ ◆

मेरी दुनिया-ए-वफा में क्या से क्या होने लगा।
इक दरीचा बंद मुझ पर एक वा होने[3] लगा॥
इक निगारे-नाज़ की फिरने लगीं आँखें 'मजाज़'।
इक बुते-काफिर का दिल दर्द-आशना होने लगा॥

◇ ◇ ◆

खाइयेगा इक निगाहे-लुत्फ का कब तक फरेब ?
कोई अफसाना बना कर बदगुमां हो जाइये॥

◇ ◇ ◇

मये-गुलफाम[4] भी है, साज़े-इश्रत[5] भी है, साकी भी।
मगर मुश्किल है आशोबे-हकीकत से[6] गुज़र जाना॥

◇ ◇ ◇

मैं कि बर्बादे-निगाराने-दिलआरा[7] ही सही,
मैं कि रुसवाए-मयो-सागरो-मीना[8] ही सही।

---

१ हृदय की जलन के बावजूद २ रंग तथा सुगंध के छल का अनुभव ३. खुलने ४. फूल जैसी सुन्दर शराब ५. सुख-संगीत ६ वास्तविकता की चुभन (पीडा) से ७ हृदयाकर्षक सुन्दरियों द्वारा बर्बाद ८. शराब के प्याले और सुराही के द्वारा अपमानित

मैं कि मकतूले-गुलो-नर्गिसे-शहला[१] ही सही,
फिर भी खाके-रहे-साहिबे-नज़रा[२] हूँ दोस्त ।।

◇ ◇ ◇

मुझे सागर दोबारा मिल गया है ।
तलातुम में[३] किनारा मिल गया है ।
मेरी बादा-परस्ती पर न जाओ ।
जवानी को सहारा मिल गया है ।।

◇ ◇ ◇

इश्क का ज़ौके-नज़्ज़ारा[४] मुफ्त मे बदनाम है ।
हुस्न खुद बेताब है जलवे दिखाने के लिए ।।

◇ ◇ ◇

वादा तेरा गो वादा-ए-बातिल[५] तो नही है ।
ये बाइसे-तस्कीने-गमे-दिल[६] तो नही है ।
क्यो खुश है कोई खस्ता-ओ-वामादा-ए-तूफा[७]?
ये मौजे-बला है कोई साहिल तो नही है ।।

◇ ◇ ◇

---

१ फूलो, नर्गिस के फूल ऐसी आखो वाली सुन्दरियो द्वारा मारा हुआ २ पारखियो के मार्ग की धूल ३ तूफान मे ४ देखने की चाह ५ झूठा वायदा ६ मन की अशान्ति के लिए शान्ति का साधन ७ तूफान के हाथो श्रात तथा शिथिल

दिल को महवे-ग़मे-दिलदार[1] किये बैठे हैं।
रिंद बनते है मगर ज़हर पिये बैठे हैं॥
चाहते है कि हर इक ज़र्रा शगूफा[2] बन जाये।
और खुद दिल ही मे एक खार[3] लिये बैठे हैं॥

◇ ◇ ◇

वक़्त की सई-ए-मुसलसल[4] कारगर[5] होती गई।
ज़िंदगी लहज़ा-ब-लहज़ा[6] मुख्तसिर होती गई।
सांस के पर्दों में बजता ही रहा साज़े-हयात[7]।
मौत के कदमो की आहट तेज़तर होती गई॥

◇ ◇ ◇

कुछ तुम्हारी निगाह काफिर थी।
कुछ मुझे भी खराब होना था॥

◇ ◇ ◇

क्या हुआ मैंने अगर हाथ बढाना चाहा ?
आप ने खुद भी तो दामन न बचाना चाहा।
यूं तो अफसाना-ए-उल्फत था अज़ल से रंगी।
हम ने कुछ और भी रंगीन बनाना चाहा॥

◇ ◇ ◇

---

१. प्रेयसी के ग़म मे तल्लीन २. कली ३. कांटा ४. निरंतर प्रयत्न ५ सफल ६. क्षण-प्रति-क्षण ७. जीवन का साज़

किस तरफ जाये कहा जाये वता दो कोई।
ज़ुल्फे-पुरख़म का[१] गिरफ्तार निगाहो का कतील[२]॥
आलमे-यास मे[३] क्या चीज़ है इक सागरे-मय।
दश्ते-ज़ुल्मात मे[४] जिस तरह खिज्र की कदील[५]॥
कितनी दुशवार है पीराने-हरम की[६] मज़िल।
इस तरफ फितना-ए-इब्लीस[७] उधर रब्बे-जलील[८]॥

◇ ◇ ◇

फिर मेरी आँख हो गई नमनाक।
फिर किसी ने मिज़ाज पूछा है॥

◇ ◇ ◇

फिर किसी के सामने चश्मे-तमन्ना[९] झुक गई।
शौक की शोखी में रगे-एहतराम आ ही गया॥
बारहा ऐसा हुआ है याद तक दिल में न थी।
बारहा मस्ती मे लब पर उनका नाम आ ही गया॥
ज़िन्दगी के ख़ाका-ए-सादा को[१०] रगी कर दिया।
हुस्न काम आये न आये इश्क काम आ ही गया॥

◇ ◇ ◇

---

१ पेचदार केशो का २ मारा हुआ ३ निराशा की स्थिति मे ४. अधियारो के जगल मे ५ मशाल ६ मस्जिद के वयोवृद्धो की ७ शैतान का उपद्रव ८ सर्वश्रेष्ठ भगवान ९ कामना-पूर्ण आँख १०. सादा रेखाचित्र

अपना ग़म औरो को दे औरों का गम लेने से क्या ।
तेरी कश्ती पार लग जायेगी इस खेने से क्या ॥
बात तो जब है कि मर जा अर्सा-गाहे-रज्म मे[1] ।
इस पे दम देने से क्या और उस पे दम देने से क्या ?



१. (जीवन के) युद्ध-क्षेत्र मे

अपना गम औरों को दे औरों का गम लेने से क्या ।
तेरी कश्ती पार लग जायेगी इस खेने से क्या ।।

बात तो जब है कि मर जा अर्सा-गाहे-रज्म मे[1] ।
इस पे दम देने से क्या और उस पे दम देने से क्या ?



१. (जीवन के) युद्ध-क्षेत्र मे